हिन्दी व्याकरण

TEACHERS'
Manual
1 to 5

हिन्दी व्याकरण 1
एवं रचना

अध्याय–1

भाषा (Language)

1. (क) ✓ (ख) ×
   (ग) ✓ (घ) ×
2. (क) लिखित, (ख) लिखित।
3. (क) मौखिक, (ख) लिखित,
   (ग) लिखा, (घ) भाषा।
4. (क) हिन्दी, (ख) सोना।
5. (क) अपनी बात दूसरों को समझाने तथा दूसरों की बात स्वयं समझने के माध्यम को भाषा कहते हैं।
   (ख) भाषा दो प्रकार की होती है–(i) मौखिक एवं (ii) लिखित।
   (ग) बात करना भाषा का मौखिक रूप है और पुस्तक पढ़ना भाषा का लिखित रूप है।

अध्याय–2

वर्ण (Letters)

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓
   (घ) × (ङ) ✓
2. (क) → (ii) (ख) → (i) (ग) → (iv)
   (घ) → (iii) (ङ) → (vi)
   (च) → (v)
3. (क) म [✓] (ख) ए [✓]
   (ग) त्र [✓] (घ) अः [✓]
4. (क) हिन्दी में ग्यारह स्वर हैं।
   (ख) हिन्दी में तैंतीस व्यंजन हैं।
   (ग) क्ष, त्र, ज्ञ, श्र – संयुक्त व्यंजन हैं।
   (घ) ड़, ढ़ – अतिरिक्त व्यंजन हैं।
5. **स्वर–** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।
   व्यंजन– ख, ग, घ, ट, ध, न, प, फ, भ, म।

अध्याय–3

मात्राएँ एवं शब्द (Symbols of Vowels and Words)

1. (क) ा (ख) ी (ग) ु
   (घ) ै (ङ) ौ
2. फूल, बंदर, आम, ओखली, सेब, मछली।
   सैनिक, माँ, कौआ, मृग, कछुआ, चिड़िया।
3. (क) फूल, (ख) लड़की,
   (ग) कोयल, (घ) खरगोश।
4. (क) किताब, (ख) मिठाई,
   (ग) लड़की, (घ) सड़क,
   (ङ) मछली, (च) शहर,
   (छ) मटर, (ज) मदन।

अध्याय–4

वाक्य (Sentences)

1. (क) यह मेरा घर है।
   (ख) चिड़िया उड़ रही है।
   (ग) अध्यापक पढ़ा रहे हैं।
   (घ) दर्जी कपड़े सिल रहा है।
2. (क) माला गीत सुना रही है।
   (ख) घोड़ा दौड़ रहा है।
   (ग) चिड़िया पेड़ पर चहचहा रही है।
   (घ) मैं रोज सुबह दूध पीता हूँ।
3. टमाटर – मैं टमाटर खाता हूँ।
   घर – यह मेरा घर है।
   चिड़िया – चिड़िया उड़ रही है।
   बंदर – बंदर पेड़ पर बैठा है।
4. (क) राम विद्यालय जाता है।
   (ख) घोड़ा दौड़ रहा है। (ग) माँ खाना बनाती है।
   (घ) गीता गाना गाती है। (ङ) मैंने गाना सुना।

अध्याय–5

संज्ञा (Noun)

1. गमला, रेडियो, कमीज, जुराब, तकिया, कलम, बैग, साइकिल।
2. (क) आकाश, (ख) विद्यालय, (ग) घोड़ा, (घ) चाँद।
3. (क) मीता, (ख) सीता, (ग) अमित, (घ) अजय कुमार, (ङ) माया देव, (च) केला, (छ) हाथी, घोड़ा, (ज) कबूतर, तोता, (झ) मथुरा, आगरा। (ञ) क्रिकेट, हॉकी, (ट) नीम, आम।
4. (i) आकाश, (ii) बादल, (iii) सूरज, (iv) विद्यालय, (v) फुटबॉल, (vi) गोल पोस्ट, (vii) बैट, (viii) बॉल, (ix) विकेट, (x) रैकेट्स, (xi) कॉर्क, (xii) नेट, (xiii) मैदान, (xiv) घास, (xv) पेड़।

अध्याय–6

सर्वनाम (Pronoun)

1. (क) खिलौना, (ख) दिल्ली, (ग) गाड़ी, (घ) सेब।
2. (क) राम विद्यालय जाता है। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।
   (ख) दीपू छत पर खड़ा है। वह पतंग उड़ा रहा है।
   (ग) चाचा जी नमस्ते, आप अंदर आइए।
3. **संज्ञा-शब्द—** राम, आगरा, जयपुर, जोधपुर, आम, कुर्सी।
   सर्वनाम-शब्द— तुम, वह, यह, आप, तुम्हारा, हमारा।
4. आप, वे, वह, यह।
5. ये, यह, वह, वे, हम, हमारा, तुम, आप, मेरा।

अध्याय–7

लिंग (Gender)

1. (क) शेरनी, (ख) बँदरिया, (ग) हंसनी, (घ) मोरनी।
2. मुर्गा-मुर्गी, दूल्हा-दुलहन, पोता-पोती, बकरा-बकरी, राजा-रानी।
3.

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
बेटी	बेटा	मौसी	मौसा
चोरनी	चोर	हथिनी	हाथी
औरत	आदमी	माता	पिता

4. **पुल्लिंग-शब्द—** मामा, चाचा, कुत्ता, बैल, कबूतर, कौआ, भालू।
   स्त्रीलिंग-शब्द— हंसनी, नानी, घोड़ी, बुआ, गाय, बिल्ली, कोयल।
5. (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) दो।

अध्याय–8

वचन (Number)

1. (क) तोते, (ख) केले, (ग) बच्चे, (घ) तारे, (ङ) तितलियाँ।
2. गमला – गमले, पहाड़ी – पहाड़ियाँ, तोता – तोते, राखी – राखियाँ, बँदरियाँ – बँदरिया, घोड़ा – घोड़े, पत्ता – पत्ते, पंखा – पंखे।
3. **एकवचन—** गुलाब, फुटबॉल, लड़की, चूहा, पेड़, आम।
   बहुवचन— तितलियाँ, फूल, लड़के, बकरियाँ, केले, पौधे।
4.

चाँद	तारे	जूता	जूते
तितली	चाबियाँ	घोड़ा	लड़के
पंखे	पत्ता	छाते	केले
बस्ता	खिलौने	गुब्बारे	बच्चा

5. ● चिड़ियाँ, पहाड़ियाँ, पेड़-पौधे, फूल, बतखें तथा तितलियाँ एक से अधिक हैं। अतः इनमें हरा रंग भरें।
   ● सूरज, गिलहरी, झरना, हाथी, खरगोश तथा बंदर एक-एक हैं। अतः इनमें लाल रंग भरें।

अध्याय–9

विशेषण (Adjective)

1. घना पेड़, मीठा आम,
   मोटी लकड़ी, सुंदर बगीचा।
2. लाल [✓], रसीला [✓],
   हरा [✓], छोटी [✓]।
3. (क) (iii) (ख) (iv)
   (ग) (ii) (घ) (i)
4. मीठा-फल, कड़वी-मिर्च,
   सफेद-अण्डा, पाँच-फूल,
   आधा-खरबूजा, घना-पेड़।
5. (क) नीले-हरे, (ख) काली,
   (ग) धारीदार-पीला, (घ) मीठी,
   (ङ) गुलाबी।

अध्याय–10

क्रिया (Verb)

1. (क) काट, (ख) देख,
   (ग) नाच, (घ) उड़।
2. (क) (ii) (ख) (i)
   (ग) (iv) (घ) (iii)
3. (क) राम [✗] (ख) काला [✗]
   (ग) आगरा [✗] (घ) विद्यालय [✗]
4. (क) मोहन खाना खा रहा है।
   (ग) माँ खाना बना रही है।
   (ख) नीता खेल रही है।
   (घ) आर्यन पतंग उड़ा रहा है।
5. सूरज- निकलना, पानी-बहना, तितली-मँडराना, लड़का-नहाना, फूल-खिलना, पक्षी-उड़ना।

अध्याय–11

विलोम शब्द (Antonyms)

1. (क) झूठ, (ख) मीठा,
   (ग) दाएँ, (घ) ठंडी।
2. (क)– (ii) (ख)– (vi)
   (ग)– (v) (घ)–(iii)
   (ङ)– (iv) (च)– (i)
3. (क) छोटा, (ख) बाहर, (ग) सूखा,
   (i) साफ, (ii) अनेक, (iii) रात।
4. काला-सफेद [✓] मीठी-ऊपर [✗]
   हल्का-पतला [✗] सूखा-गीला [✓]
   ठंडा-गर्म [✓] गंदा-नीचे [✗]
   मोटा-भारी [✗] आगे-पीछे [✓]
5. रात - रात्रि [ ] दिन [✓] उजाला [ ]
   पुराना - नया [✓] अच्छा [ ] सफेद [ ]
   पढ़ना - सुनाना [ ] बोलना [ ] लिखना [✓]

अध्याय–12

पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

1. (क) वृक्ष-पेड़ [✓] (ख) सदन-घर [✓]
   (ग) मनुज-आदमी [✓] (घ) सिंह-केसरी [✓]
2. (क) पथ, रास्ता, (ख) जग, संसार,
   (ग) नभ, गगन, (घ) प्रभाकर, दिवाकर।
3. (क) (iv) (ख) (v) (ग) (i)
   (घ) (iii) (ङ) (ii)
4. (क) पंद्रह अगस्त को लालकिले पर ध्वज फहराया जाता है।
   (ख) कल मेरा सखा मुझसे मिलने आएगा।
   (ग) एक लता वृक्ष के ऊपर चढ़ गई।
   (घ) महात्मा वन में तपस्या करते हैं।
   (ङ) आकाश में चंद्रमा चमकता है।

अध्याय–13

कहानी–लेखन (Story-Writing)

1. **केकड़ा और बगुला**

एक तालाब में अनेक मछलियाँ रहती थीं। वर्षा न होने के कारण तालाब का पानी सूखने लगा। तालाब के पास एक बगुला रहता था। वह मछलियों से बोला, ''यहाँ से थोड़ी दूर पर एक बड़ा तालाब है। उसमें बहुत पानी है।'' मछलियाँ बोलीं, ''हम वहाँ कैसे जा सकती हैं?'' बगुले ने कुछ सोचकर कहा, ''मैं तुम सबको एक-एक करके वहाँ पहुँचा दूँगा।'' मछलियाँ उसकी बातों में आ गईं। बगुला एक-एक मछली को

लेकर उड़ जाता और रास्ते में एक पहाड़ी पर पटककर उन मछलियों को मारकर खा जाता। इस तरह उसने सारी मछलियों को खा लिया। उस तालाब में एक केकड़ा भी रहता था। जब केकड़े ने देखा कि सारी मछलियाँ जा चुकी हैं तब उसने बगुले से कहा, ''मुझे भी उस तालाब में पहुँचा दो।'' केकड़ा बड़ा था। अत: बगुले ने उसे अपनी पीठ पर बैठा लिया। रास्ते में वे उसी पहाड़ी के पास पहुँचे। केकड़े ने वहाँ मछलियों की हड्डियाँ देखीं और वह बगुले की चालाकी समझ गया। जब तक बगुला केकड़े को मारता, उससे पहले ही बगुले की गर्दन पर केकड़े ने अपने पंजे गड़ा दिए और उसे मार डाला।

शिक्षा- कभी किसी को धोखा नहीं देना चाहिए।

2. **कछुआ और खरगोश**

एक कछुआ था और एक खरगोश था। खरगोश को अपने तेज दौड़ने पर बहुत घमंड था। उसने कछुए को नीचा दिखाने के लिए एक प्रतियोगिता रखी और कुछ दूरी पर एक पेड़ को छूने का लक्ष्य रखा। खरगोश बहुत तेज गति से दौड़ा। उसने देखा कि कछुआ बहुत पीछे है। उसने सोचा कि मैं कुछ देर आराम कर लूँ। उठकर फिर तेज दौड़कर आगे बढ़ जाऊँगा और एक पेड़ के नीचे सो गया। उसे गहरी नींद आ गई। कछुआ धीमी गति से लगातार चलता रहा और जिस पेड़ को छूना था उसके पास खरगोश से पहले पहुँच गया और जीत गया। जब खरगोश की आँख खुली तो कछुआ प्रतियोगिता जीत चुका था। खरगोश हारने के कारण पछतावा करने लगा और अपने घमंड पर बहुत शर्मिन्दा हुआ।

शिक्षा- हमें कभी घमंड नहीं करना चाहिए।

3. **लालच का फल**

किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह बहुत गरीब था। एक महात्मा ने उसकी हालत पर तरस खाकर उसे एक मुर्गी दी और कहा, ''यह करामाती मुर्गी है। इसकी देखभाल करो; यह तुम्हारी गरीबी को दूर कर देगी।'' मुर्गी सचमुच करामाती थी। वह प्रतिदिन सोने का एक अंडा देती थी। किसान उस सोने के अंडे को बाजार में बेच आता। इस प्रकार धीरे-धीरे उसकी गरीबी दूर होने लगी। सोने के अंडे बेच-बेचकर किसान काफी धनवान हो गया; किन्तु धनवान होने के साथ ही उसका लालच बढ़ता गया। उसने सोचा, 'इस मुर्गी के पेट में बहुत सारे सोने के अंडे हैं। यदि मैं उन सभी अंडों को इसके पेट से निकाल लूँ तो मैं एक ही दिन में बहुत सारा धन प्राप्त कर सकता हूँ।' फिर क्या था, उसने छुरी ली और उस मुर्गी के पेट को चीर दिया। मुर्गी के पेट में एक भी अंडा नहीं मिला। यह देखकर किसान बहुत दुखी हुआ। उसने अपने लालच के कारण सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को ही मार डाला था।

शिक्षा- लालच बुरी बला है।

अध्याय–14

निबन्ध–लेखन (Essay-Writing)

1. (i) तितली एक उड़ने वाला कीड़ा है।
   (ii) यह कई रंग की होती है।
   (iii) इसके पंख रंग-बिरंगे होते हैं।
   (iv) यह फूलों से पराग इकट्ठा करती है।
   (v) इसी पराग से शहद बनता है।
   (vi) शहद बहुत ही मीठा होता है।
2. (i) यह मोर है।
   (ii) यह एक पक्षी है।
   (iii) इसके पंख रंग-बिरंगे तथा गर्दन नीले रंग की होती है।
   (iv) इसके सिर पर कलगी होती है।
   (v) यह कीड़े-मकोड़े तथा दाना खाता है।
   (vi) जब यह पंख फैलाकर नाचता है तब बहुत सुंदर लगता है।
   (vii) यह हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।

●●

हिन्दी व्याकरण एवं रचना 2

अध्याय–1

भाषा (Language)

1. (क) बोली, (ख) दो,
   (ग) लिखित, (घ) मौखिक।
2. ● पुस्तक पढ़ना और लिखना – लिखित भाषा।
   ● फोन पर बातें करना और आपस में बातचीत करना – मौखिक भाषा।
3. (क) गधा - रेंकना, (ख) घोड़ा - हिनहिनाना,
   (ग) शेर - दहाड़ना, (घ) कोयल - कूकना।
4. (क) गृहकार्य करना भाषा का लिखित रूप है।
   (ख) बोलकर अपनी बात कहना भाषा का मौखिक रूप है।
   (ग) भाषा के दो रूप होते हैं।
   (घ) पशु-पक्षियों की आवाज को बोली कहते हैं।

अध्याय–2

वर्ण (Letters)

1. (क) ग्यारह, (ख) इकाई,
   (ग) अयोगवाह, (घ) संयुक्त।
2. **स्वर—** अ, ई, उ, ऋ, ऐ, ओ।
   व्यंजन— च, ट, ब, ल, श, ह
3. (क)–(iii) (ख)–(iv)
   (ग)–(ii) (घ)–(i)
4. (क) वर्ण दो प्रकार के होते हैं- (i) स्वर, (ii) व्यंजन।
   (ख) हिन्दी में स्वरों की संख्या ग्यारह है।
   (ग) भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।
   (घ) हिन्दी में व्यंजनों की संख्या तैंतीस है।
   (ङ) एक से अधिक वर्णों के मेल से बनने वाले व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
5. नट, थन, मन, रच, पच, पथ, रथ, नथ, कह, सह। महल, चहल-पहल, पलक, चहक, मटर, मकर, टहल। चट-पट, बट, हट, टल, हम, बल, हल, नल। कमर, रकम, करम, परम, हरम, नरम। मरहम, मलमल, थरमस, कटहल, सरपट, हलचल।

अध्याय–3

मात्राएँ, शब्द और वाक्य (Vowel-Symbols, Words and Sentences)

1. (क) 'अ' की, (ख) शब्द, (ग) वाक्य।
2. (क) रुपया, (ख) मोर, (ग) पतंग।
3. वृक्ष, रुपया, ट्रक, अमरूद, कुरसी, मेज।
4. मदारी, बतख, कुरसी, ढोलक, तितली, मछली।
5. (क) आम फलों का राजा है।
   (ख) मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।
   (ग) मीरा भजन गाती है।
   (घ) यह मेरा विद्यालय है।

अध्याय–4

संज्ञा (Noun)

1. (क) आम, (ख) कुतुबमीनार,
   (ग) वर्षा, (घ) ताजमहल।
2. (क) प्राणी, (ख) स्थान,
   (ग) भाव, (घ) वस्तु।
3. (क)-(ii) (ख)-(i)
   (ग)-(v) (घ)-(iii)
   (ङ)-(iv) (च)-(vii)
   (छ)-(vi)
4. (क) देवेन्द्र कुमार-सरिता देवी, (ख) आम-सेब,
   (ग) मथुरा, आगरा, (घ) आलू-लौकी,
   (ङ) भारत-चीन, (च) बाजार-मंदिर,
   (छ) यमुना-गंगा, (ज) सोमवार-मंगलवार,
   (ङ) जनवरी-फरवरी, (ञ) खटास-मिठास।
5. (क) दर्द, (ख) गुस्सा,
   (ग) प्यास, (घ) दु:ख।

अध्याय–5

सर्वनाम (Pronoun)

1. मैं, आप, उसका, कौन, जिसका, तुम्हारा, मेरी, किसका।
2. (क) आप, (ख) वे, (ग) यह, (घ) तुम, (ङ) हम।
3. (क)-(ii) (ख)-(i) (ग)-(v) (घ)-(vi) (ङ)-(iii) (च)-(iv)
4. (क) उसका [✓] आम [✗]
   तुम्हारा [✓] उसे [✓]
   (ख) मेरा [✓] इसका [✓]
   बगीचा [✗] आप [✓]
   (ग) तुम [✓] गुड़िया [✗]
   समोसा [✗] खिलौना [✗]
   (घ) नाव [✗] अपनी [✓]
   लकड़ी [✗] जिसका [✓]
5. (क) यह मेरी गुड़िया है।
   (ख) मुझे बाजार जाना है।
   (ग) यह इसकी चूड़ी है।
   (घ) मैं भी साथ चलूँगा।
   (ङ) उसका नाम राधा है।
6. तुम, मुझे, आप, मैं, अपना, उसका, यह, मेरा, वह।
7. (क) संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
   (ख) बड़ों के लिए 'आप, आपने, आपका, आपकी, आपसे' आदि सर्वनामों का प्रयोग होता है।
   (ग) अपने लिए 'मैं, मुझे, मेरा, हम, हमें, हमारा' आदि सर्वनामों का प्रयोग होता है।

अध्याय–6

लिंग (Gender)

1. **पुल्लिंग–** राजा, अध्यापक, बकरा, चाचा, बैल।
   स्त्रीलिंग– मोरनी, मालिन, चींटी, दादी, हथिनी।
2. (क) नौकरानी, (ख) राजा, (ग) दादी, (घ) मोरनी, (ङ) कुत्ता।
3. (क) भाई, (ख) गुड़िया, (ग) बंदर, (घ) चिड़ा।
4. लड़की, बकरी, हाथिनी, राजा।
   लड़का, बकरा, हाथी, रानी।
   शेर, गाय, मुर्गा, मोरनी।
   शेरनी, बैल, मुर्गी, मोर।
5. राम-सीता, चाचा-चाची, हाथी-हथिनी, मोर-मोरनी, नाना-नानी।

अध्याय–7

वचन (Number)

1. **एकवचन–** कलम, तोता, बतख, दरवाजा।
   बहुवचन– गुब्बारे, मालाएँ, गन्ने, मुर्गे।
2. (क) एकवचन, (ख) बहुवचन, (ग) एकवचन, (घ) बहुवचन।
3. (क) पंखा, (ख) मछलियाँ, (ग) मोमबत्ती, (घ) तोते।
4. (क) मोमबत्ती जल रही है।
   (ख) मेरी टोपियाँ रंग-बिरंगी हैं।
   (ग) दादी ने कहानियाँ सुनाईं।
   (घ) सड़क पर गाड़ियाँ चल रही हैं।
   (ङ) गली में कुत्ते भौंक रहे हैं।
5. (क) बहुवचन, एकवचन, बहुवचन।
   (ख) एकवचन, बहुवचन, बहुवचन।
   (ग) बहुवचन, एकवचन, बहुवचन।

अध्याय–8

विशेषण (Adjective)

1. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं।
   (ख) विशेषण चार प्रकार के होते हैं–
   1. गुणवाचक विशेषण, 2. परिमाणवाचक विशेषण, 3. संख्यावाचक विशेषण तथा 4. संकेतवाचक विशेषण।
   (ग) परिमाणवाचक विशेषण–ये विशेषण संज्ञा शब्दों की निश्चित या अनिश्चित माप-तोल का बोध कराते हैं; जैसे–दो लीटर दूध, बहुत बारिश आदि।

2. (क) छोटी, (ख) खट्टा,
(ग) सुंदर, (घ) रंग-बिरंगे,
(ङ) सफेद, (च) उस।
3. (क) छायादार, हरा, (ख) रंग-बिरंगी, छोटी,
(ग) मीठी, ठंडी, (घ) लाल, मीठा।
4. (क)-(iii), (ख)-(i), (ग)-(ii), (घ)-(vi), (ङ)-(iv), (च)-(vii), (छ)-(v)

अध्याय–9

क्रिया (Verb)

1. (क) जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।
(ख) पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, सोना, जागना।
2. (क) खा, (ख) देख,
(ग) गरज, (घ) खाती,
(ङ) पढ़, (च) कर।
3. (क) सीता [✗] (ख) नाव [✗]
(ग) गीत [✗] (घ) आटा [✗]
4. (क)-(iii) (ख)-(i)
(ग)-(v) (घ)-(ii)
(ङ)-(iv)
5. **सिपाही** – चोर पकड़ता है।
डाकिया – चिट्ठी बाँटता है।
मोची – जूते बनाता है।
दर्जी – कपड़े सिलता है।
बढ़ई – फर्नीचर बनाता है।
नाई – बाल काटता है।
अध्यापक – पढ़ाता है।
चित्रकार – चित्र बनाता है।
कुम्हार – मिट्टी के बर्तन बनाता है।

अध्याय–10

विलोम शब्द (Antonyms)

1. (क) खट्टा, (ख) बड़ा,
(ग) बहादुर, (घ) जल्दी।
2. (क) बाहर, (ख) नीचे,
(ग) गरमी, (घ) दु:खी।
3. (क) सुबह, (ख) शिक्षित,
(ग) लाभ, (घ) अन्याय,
(ङ) धनी, (च) पुण्य।
4. दिन, पतला, उतरना, रोना,
निर्धन, महल, सफेद, रात।

अध्याय–11

पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

1. (क) वृक्ष-पेड़, (ख) सदन-घर,
(ग) मनुज-आदमी, (ङ) सिंह-केसरी।
2. (क) मार्ग-पथ, राह, (ख) नाग-अहि, सर्प,
(ग) आकाश-नभ, गगन,
(घ) सूरज-प्रभाकर, भानु।
3. (क)-(ii) (ख)-(iv)
(ग)-(i) (घ)-(iii)
4. (क) पंद्रह अगस्त को लाल किले पर <u>ध्वज</u> फहराया जाता है।
(ख) कल मेरा <u>सखा</u> मुझसे मिलने आएगा।
(ग) एक <u>लता</u> <u>वृक्ष</u> के ऊपर चढ़ गई।
(घ) <u>आकाश</u> में <u>चंद्रमा</u> चमकता है।

अध्याय–12

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

1. (क) कुम्हार, (ख) सहपाठी,
(ग) किसान, (घ) मोची।
2. (क) डाकिया, (ख) दर्जी के,
(ग) अनपढ़, (घ) चित्रकार।
3. (क) निर्धन, (ख) परिश्रमी,
(ग) पायलट, (घ) माली,
(ङ) निर्बल, (च) निर्दय,
(छ) मूर्ख, (ज) कायर,
(झ) विनम्र, (ञ) सदाचारी।
4. (क) जो गीत गाता है,
(ख) जो साथ पढ़ता है,
(ग) जो रोगियों की देखभाल करती है,
(घ) जो लकड़ी का फर्नीचर बनाता है,

(ङ) जो पुस्तकें लिखता है,
(च) जो खेती करता है,
(छ) जो चित्र बनाता है,
(ज) जो मूर्ति बनाता है,
(झ) जो कहानी लिखता है,
(ञ) जो गीत लिखता है।

अध्याय–13

कहानी–लेखन (Story-Writing)

1. **हाथी और दर्जी**

एक हाथी था। एक दर्जी था। दोनों दोस्त थे। हाथी रोज पानी पीने नदी की ओर जाता था। रास्ते में दर्जी की दुकान थी। दर्जी उस हाथी को रोज केला खिलाता था। बदले में हाथी दर्जी के लिए कमल का फूल लेकर आता था। एक दिन दर्जी दुकान पर नहीं था। उसका लड़का दुकान पर बैठा था। हाथी रोज की तरह दुकान पर आया। दर्जी के लड़के को शरारत सूझी। उसने हाथी की सूड़ में सुई चुभो दी। हाथी चुपचाप चला गया। उस दिन हाथी अपनी सूड़ में कीचड़ भरकर लाया। उसने दर्जी की दुकान पर कीचड़ डाल दिया। दर्जी के लड़के को सबक मिल गया।

शिक्षा– जैसी करनी; वैसी भरनी।

2. **लालची कुत्ता**

एक कुत्ता था। एक दिन सड़क पर उसे रोटी का एक टुकड़ा मिला। वह उसे मुँह में लेकर अपने घर की तरफ जाने लगा। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। जब कुत्ता नदी के पुल पर से गुजरा तो उसने नदी के पानी में अपनी परछाईं देखी। कुत्ते ने समझा कि किसी दूसरे कुत्ते के मुँह में रोटी का टुकड़ा है। उसके मन में लालच आ गया। वह परछाईं वाले कुत्ते से रोटी का टुकड़ा छीनने के लिए जैसे ही भौंका, तभी उसका रोटी का टुकड़ा भी पानी में गिर गया। लालच के कारण कुत्ता अपनी रोटी भी खो बैठा।

शिक्षा– लालच बुरी बला है।

3. **बंदर और मगरमच्छ**

एक नदी के किनारे जामुन का एक पेड़ था। उस पेड़ पर एक बंदर रहता था। नदी में एक मगर रहता था। मगर कभी-कभी नदी से निकलकर जामुन के पेड़ तक आता तो बंदर उसे मीठे जामुन खिलाता। धीरे-धीरे उन दोनों में मित्रता हो गई। एक दिन मगर थोड़ी-सी जामुन अपनी पत्नी के लिए ले गया। उसकी पत्नी को जामुन बहुत स्वादिष्ट लगीं। उसने मगर से कहा, ''जो बंदर प्रतिदिन इतनी मीठी-मीठी जामुन खाता है, उसका कलेजा मितना मीठा होगा! तुम बंदर को यहाँ लेकर आओ, ताकि मैं उसका कलेजा खा सकूँ।'' दूसरे दिन मगर ने बंदर को अपने घर चलकर भोजन करने का न्योता दिया। बंदर सहज स्वभाव से मगर की पीठ पर बैठकर उसके घर चल दिया। नदी के बीच में पहुँचकर मगर ने बंदर को बताया कि वास्तव में उसकी पत्नी उसका कलेजा खाना चाहती है। बंदर ने बुद्धि से काम लेते हुए जवाब दिया, ''अरे! तुमने पहले क्यों नहीं बताया। मेरा कलेजा तो जामुन के पेड़ की डाली पर ही टँगा है। इधर-उधर उछलने-कूदने से वह टूट न जाए, इसलिए मैं उसे पेड़ पर टाँग देता हूँ। वापस किनारे पर चलो ताकि में पेड़ से कलेजा लाकर अपनी प्यारी भाभी को दे सकूँ।'' मूर्ख मगर तुरंत किनारे की तरफ लौटा। किनारे के पास पहुँचते ही बंदर मगर की पीठ से उछलकर पेड़ पर चढ़ गया और बोला, ''अरे मूर्ख! क्या कलेजा शरीर से अलग होता है? तूने मेरी मित्रता का बदला विश्वासघात से दिया। तू मेरी मित्रता के योग्य नहीं है।'' यह सुनकर मूर्ख मगर अपना-सा मुँह लेकर वापस चला गया।

शिक्षा– मित्र के साथ धोखा महापाप है।

अध्याय–14

निबन्ध–लेखन (Essay-Writing)

1. (1) सुन्दर, (2) बागों,
(3) रंग-बिरंगे, (4) रंगों,
(5) बच्चे, (6) फूलों,
(7) पराग, (8) चित्र,
(9) प्यार, (10) सताना।

2. **मेरा गाँव**

(1) मेरे गाँव का नाम मुकुन्दपुरी है। (2) यह यमुना नदी के किनारे बसा है। (3) मेरे गाँव की आबादी

लगभग आठ सौ है। (4) गाँव वालों का मुख्य व्यवसाय खेती एवं पशु-पालन है। (5) गाँव का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुन्दर है। (6) गाँव के चारों ओर हरे-भरे पेड़ हैं। (7) मेरे गाँव के सभी लोग आपस में बड़े प्रेम से रहते हैं। (8) मेरे गाँव में प्राथमिक विद्यालय, स्वास्थ्य केन्द्र तथा डाकघर की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। (9) नदी किनारे स्थित होने के कारण बाढ़ तथा भूमि-कटाव मेरे गाँव की मुख्य समस्या हैं। (10) इन समस्याओं को दूर करने हेतु वृक्षारोपण तथा तटबन्ध बनाए जा रहे हैं।

3. **● मेरा मित्र**

(1) वैसे तो मेरे कई मित्र हैं, किन्तु विवेक मेरा प्रिय मित्र है। (2) विवेक मेरा पड़ोसी भी है, और मेरी ही कक्षा में पढ़ता है। (3) उसके पिता जी नगर के विख्यात चिकित्सक हैं। (4) उसकी माताजी एक माध्यामिक विद्यालय में हिन्दी की अध्यापिका हैं। (5) वह सदैव समय पर विद्यालय आता है। (6) वह सदैव प्रसन्न रहता है, कभी किसी से झगड़ा नहीं करता। (7) वह सदा बड़ों का आदर करता है तथा छोटों से प्यार करता है। (8) वह पढ़ने में बहुत तेज है, और कक्षा में प्रथम रहता है। (9) वह खेलों में भी रुचि लेता है तथा फुटबॉल का अच्छा खिलाड़ी है। (10) वह पढ़ाई में मेरी सहायता करता है, मुझे अपने मित्र पर गर्व है।

● मेरा शहर

(1) मेरे शहर का नाम दिल्ली है। (2) दिल्ली भारत की राजधानी है। यह एक ऐसा शहर है जिसे भारत का दिल माना जाता है। (3) महाभारत काल में प्रसिद्ध इंद्रप्रस्थ नगरी दिल्ली को ही कहा जाता है। (4) यहाँ अनेक ऐतिहासिक तथा दर्शनीय स्थल हैं। यहाँ लाखों की संख्या में सैलानी आते हैं। (5) दिल्ली में ही प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति रहते हैं। (6) यहाँ शिक्षा, चिकित्सा, नौकरी आदि की सुख-सुविधाएँ विद्यमान हैं। (7) दिल्ली में यातायात के उत्तम साधन हैं। (8) मेट्रो ट्रेन ने दिल्ली के सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं। (9) यहाँ आज जगह-जगह बड़े मॉल देखे जा सकते हैं। (10) दिल्ली में ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

● मेरा छोटा भाई

(1) मेरे छोटे भाई का नाम अंकित है। (2) घर में सभी उसको प्यार से 'गोलू' कहते हैं। (3) वह बहुत नटखट किन्तु भोला है। (4) उसे खाने में दाल-चावल बहुत पसंद हैं। (5) वह मेरे ही विद्यालय में कक्षा-1 में पढ़ता है। (6) वह पढ़ने में बहुत तेज है। (7) वह कक्षा में कभी शरारत नहीं करता। (8) उसके शिक्षक उसे बहुत प्यार करते हैं। (9) वह मेरे साथ ही खेलता-कूदता है। (10) मुझे अपने छोटे भाई से बहुत प्यार है।

● मेरा विद्यालय

(1) मेरे विद्यालय का नाम 'शारदा बाल मंदिर' है। (2) यह मेरे घर से लगभग एक किमी दूर है। (3) इसकी गिनती नगर के प्रसिद्ध विद्यालयों में होती है। (4) इस विद्यालय में लगभग छः सौ छात्र पढ़ते हैं। (5) विद्यालय में प्रधानाचार्य सहित पच्चीस शिक्षक हैं। (6) सभी अध्यापक अपने विषय के विद्वान तथा परिश्रमी हैं। (7) मेरे विद्यालय का भवन बहुत सुन्दर तथा विशाल है। (8) यहाँ बीस कमरे तथा दो हाल हैं जिनके सामने हरा-भरा मैदान है। (9) मेरे विद्यालय में एक पुस्तकालय एवं वाचनालय भी है। (10) मेरे विद्यालय का परीक्षाफल शत-प्रतिशत रहता है।

● ●

हिन्दी व्याकरण एवं रचना 3

अध्याय–1

भाषा एवं लिपि (Language and Script)

1. (क) भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है।
   (ख) भाषा मुख्यत: दो प्रकार की होती है—(i) मौखिक, (ii) लिखित।
   (ग) भाषा को लिखने के निश्चित चिह्नों को लिपि कहते हैं।
2. (क) हिंदी, (ख) देवनागरी,
   (ग) बोली, (घ) सांकेतिक।
3. (क) [✓] (ख) [✗]
   (ग) [✗] (घ) [✓]
4. लिखित भाषा, सांकेतिक भाषा,
   बोली, लिपि,
   मौखिक भाषा।
5. राजस्थान–मारवाड़ी, गुजरात–गुजराती, बंगाल–बांग्ला, उत्तर प्रदेश–हिंदी, तमिलनाडु–तमिल।

अध्याय–2

वर्ण तथा संयुक्त व्यंजन (Letters and Compound Consanants)

1. (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं।
   (ख) हिन्दी वर्णमाला में कुल चवालीस (44) वर्ण होते हैं।
   (ग) अं, अँ तथा अ: वर्ण अयोगवाह कहलाते हैं।
   (घ) क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र वर्ण संयुक्त वर्ण कहलाते हैं।
2.

आग	ओखली	ऋषि	एड़ी
ऊन	उसका	अकेला	आम
अस्पताल	आजादी	अच्छाई	अमर

3.

कई	ईख	औसत	ओस
उस	एक	आठ	अनार
इमली	कलश	उमस	अगस्त

4. ऊ–ऋ, झ्–ञ्, ल्–व्, छ्–ज्।
   ए–ऐ, ठ्–ड्, आ–इ, ज्–झ्।
   ओ–औ, ढ्–ण्, ङ्–च्, य्–र्।
   ट्–ठ्, ब्–भ्, ड्–ढ्, स्–ह्।
   च्–छ्, म्–य्, क्–ख्, प्–फ्।
5. अ – स्वर, ऋ–स्वर,
   अं–अनुस्वार, ट्–व्यंजन,
   श्र – संयुक्त वर्ण, ऑ– आगत वर्ण,
   ड़– विशिष्ट वर्ण।

अध्याय–3

मात्राएँ, शब्द एवं वाक्य (Signs of Vowels, Words and Sentences)

1. (क) व्यंजनों के साथ लगने वाले स्वरों के चिह्नों को मात्रा कहते हैं।
   (ख) वर्णों के सार्थक समूह से शब्द बनते हैं।
   (ग) शब्दों के क्रमबद्ध एवं सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
2. (क) [✗] (ख) [✓]
   (ग) [✗] (घ) [✓]
   (ङ) [✗]
3. क् + आ – काम, काल।
   क् + इ – किताब, किसान।
   र् + उ – रुद्र, रुपया।
   र् + ऊ – रूप, रूसी।
   क् + ऋ – कृपा, कृष्ण।
   ब् + ए – बेचना, बेबस।
4. (ॅ) – अर्श, अर्ज, फर्श, वर्ष।
   (ॅ) – भ्रम, द्रव, क्रम, वक्र।
   (ॅ) – ट्रक, राष्ट्र, ट्राम, ट्रेन।
5. क् + ऋषक = कृषक,
   म् + आला = माला,
   क् + एला = केला,
   प् + औधा = पौधा,

ख् + इलौना = खिलौना,
थ् + ऐला = थैला।

6. (क) तुम मेरे घर आए।
(ख) यह मेरी पुस्तक है।
(ग) तिरंगा हमारा राष्ट्रीय ध्वज है।
(घ) चिड़िया दाना चुग रही है।

7. (क) (ii) ऋ, (ख) (i) रूल,
(ग) (iii) ्र , (घ) (i) ज् + ञ् + अ,
(ङ) (ii) कुआँ।

अध्याय–4

संज्ञा (Noun)

1. (क) अनामिका, (ख) कमल,
(ग) मोर, (घ) मिठास,
(ङ) आगरा, (च) पतंगें।

2. (क) कड़वा [✗] (ख) काला [✗]
(ग) उड़ना [✗] (घ) खेलना [✗]

3. (क) [✓] (ख) [✗]
(ग) [✗] (घ) [✗]

4. दो व्यक्तियों के नाम– राम, रहीम। दो पशुओं के नाम– गाय, भैंस ।
दो पक्षियों के नाम– कबूतर, तोता। दो स्थानों के नाम– बाग, बाजार।
दो वस्तुओं के नाम– मेज, कुर्सी। दो भावों के नाम– शांति, दया।

5. (क) पीले आम में मिठास है।
(ख) रोहन छत पर पतंग उड़ा रहा है।
(ग) सीता बाजार से दूध, दही, और मिठाई लाई।
(घ) राधा और मोहन हवाईजहाज से अमेरिका गए।
(ङ) खरबूज तथा तरबूज गर्मी के दिनों में मिलते हैं।

अध्याय–5

सर्वनाम (Pronoun)

1. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–
(i) उत्तम पुरुषवाचक, (ii) मध्यम पुरुषवाचक, (iii) अन्य पुरुषवाचक।

2. (क) मुझे, (ख) हम,
(ग) मेरी, मेरा (घ) वह,
(ङ) मेरी।

3. (क) वह [✓] आप [✓]
(ख) मैं [✓] उसे [✓]
(ग) उन्हें [✓] उसके [✓]
(घ) मेरे [✓] तुम [✓]

4. (क) चिड़िया, (ख) पतंग,
(ग) तोता, (घ) रमा,
(ङ) नीम।

5. मेरी, वह, उसके, उसका, उसे, उसने, मैंने, उसे, मुझे, हमारी।

6. **संज्ञा**– सीता, चाचाजी, पत्र, नाव, घर, आम, मिठास, कम्प्यूटर।
सर्वनाम– वह, आप, उसका, मेरी, तुम्हारा, इसका, इन्होंने, उसको।

अध्याय–6

लिंग (Gender)

1. (क) कबूतरी, (ख) धोबिन,
(ग) रानी, (घ) पिताजी,
(ङ) भाई।

2. दादा, दादी, मोर, मोरनी, मुर्गा, मुर्गी, अध्यापक, अध्यापिका, बैल, गाय, भाई, बहन।

3. नर भालू – मादा भालू, चूहा–चुहिया, लेखक–लेखिका, चोर– चोरनी, नर मछली–मादा मछली, बंदर–बँदरिया।

4. (क) लीची (ख) नाक
(ग) पेड़ा (घ) दरवाजा
(ङ) तकिया

5. (क) गायक– गायिका,
(ख) अध्यापक–अध्यापिका,
(ग) नर भालू– मादा भालू,
(घ) ऊँट–ऊँटनी,
(ङ) भैया–भाभी।

6. (क) उसका पोता बाजार जा रहा है।
(ख) मेरी बहन पढ़ रही है।

(ग) नौकरानी रानी का काम कर रही है।
(घ) मालिन बगीचे में पानी दे रही है।
(ङ) अध्यापिका बालिकाओं को पढ़ा रही हैं।

अध्याय–7

वचन (Number)

1. केले, कन्याएँ, पतंगें, गुड़ियाँ, मिठाइयाँ।
2. (क) चिड़िया पिंजरे में है।
   (ख) मेज पर सब्जियाँ रखी हैं।
   (ग) लड़की खेल रही है।
   (घ) आज मैंने जलेबियाँ खाईं।
3. दरवाजे [✓] पतंगें [✓]
   बिल्लियाँ [✓] मालाएँ [✓]
   बंदूकें [✓]।
4. (क) [✗] (ख) [✓]
   (ग) [✓] (घ) [✗]
   (ङ) [✗]।
5. (क) केले (ख) बाल
   (ग) चिड़िया (घ) परी।
6. **एक**-एक लौकी, एक कासीफल, एक खरबूजा, एक तरबूज, एक कटहल।
   अनेक-दो आम, तीन सेब, चार केले, चार भिंडियाँ, दो करेले।

अध्याय–8

विशेषण (Adjective)

1. **हाथी** - (मोटा) **पहाड़** - (ऊँचा)
   पैंसिल - (लम्बी) **कौआ** - (काला)
   बॉल - (गोल) **तितली** - (रंग-बिरंगी)
2. (क) पाँचवीं, (ख) बीमार,
   (ग) छोटी, (घ) तेज,
   (ङ) कड़वा, (च) पीले।
3. नीला-आकाश, वफादार-कुत्ता, चालाक-लोमड़ी, ताजे-फल, काला-कौआ।
4. रंग-बिरंगे-फूल, स्वादिष्ट-भोजन, बूढ़ा-आदमी, दो लीटर-दूध, रंग-बिरंगी-तितली।
5. (क) पुराना, (ख) हँसमुख,
   (ग) समझदार, (घ) बड़ा,
   (ङ) चौड़ी, (च) ठंडी।

अध्याय–9

क्रिया (Verb)

1. (क) पिलाया, (ख) गाएगी,
   (ग) हैं, (घ) है।
2. (i) पढ़ना, (ii) लिखना,
   (iii) भौंकना (iv) खाना,
   (v) सोना।
3. (i) लड़का झूला → झूल रहा है।
   (ii) मैं झूठ नहीं → बोलता हूँ।
   (iii) बादल → गरज रहे हैं।
   (iv) शेर → दहाड़ रहा है।
   (v) वर्षा → हो रही है।
4. आज मौसम सुहाना है। ठंडी हवा चल रही है। बादल छा रहे है। हल्की-हल्की बारिश हो रही है। बच्चे पानी में कागज की नाव चला रहे हैं। माँ पकौड़े और चाय बना रही है। पिताजी समोसे लाए हैं। सभी मौसम का आनंद ले रहे हैं। बच्चे बहुत खुश हैं।
5. पढ़ना - पढ़ा, पढ़े, पढ़ूँगा, पढ़ो, पढ़ेंगे।
   चढ़ना - चढ़ा, चढ़े, चढ़ूँगा, चढ़ो, चढ़ेंगे।
   जाना - गया, गए, जाऊँगा, जाओ, जाएँगे।
   पीना - पिया, पिए, पीऊँगा, पिओ, पिएँगे।
6. एक परात में आटा लो। उसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर आटा गूँधो। चूल्हा जलाओ और उस पर तवा रखो। आटे की छोटी-छोटी लोई बनाओ और चकले पर बेलन से रोटी बेलो। रोटी तवे पर डालो। एक तरफ से हल्की सिकने पर पलटो और दूसरी तरफ से भी सिकने पर तवा हटाकर चिमटे से चूल्हे पर सेको। घी लगाओ और चटनी, सब्जी के साथ खाओ।

अध्याय–10

विराम–चिह्न (Punctuation Marks)

1. पूर्ण विराम- (।) अल्पविराम- (,), प्रश्नवाचक चिह्न- (?), विस्मयादिबोधक चिह्न- (!)।

2. (क) होली कब मनाई जाती है?
(ख) शाबाश! तुमने दौड़ प्रतियोगिता जीत ली।
(ग) भालू नाच रहा है।
(घ) देखो, कितना सुंदर बगीचा है।
(ङ) ठहरो, मैं भी साथ चल रहा हूँ।
(च) हाय! मैं फेल हो गया।

अध्याय–11

शब्द–ज्ञान (Knowledge of Work)

(क) पर्यायवाची शब्द

1. **बादल** – जलद, वारिद;
पेड़ – तरु, वृक्ष;
हाथी – गज, कुंजर;
शेर – सिंह, केसरी;
घर – गृह,सदन;
फूल – पुष्प, सुमन।

2. मित्र – सहपाठी [✗]
गाय – बकरी [✗]
पानी – जलज [✗]
माँ – गाय [✗]
आग – नीर [✗]
वायु – अनल [✗]

(ख) विलोम शब्द

1. (क) पक्के, (ख) मीठे,
(ग) निर्धन, (घ) भलाई
(ङ) पराजय (च) अपमान,
(छ) दु:ख, (ज) पाताल।

2. आशा – निराशा [✓]
आदर – अनादर [✓]
जमीन – आसमान [✓]
बहादुर – कायर [✓]
निडर – डरपोक [✓]

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. (क) हलवाई, (ख) दैनिक,
(ग) पुस्तकालय, (घ) लोहार,
(ङ) स्वदेशी।

2. **जल में रहने वाला** – जलचर,
सप्ताह में होने वाला – साप्ताहिक,
आलस्य करने वाला – आलसी,
अधिक बोलने वाला – वाचाल,
पत्र बाँटने वाला – डाकिया,
मूर्ति बनाने वाला – मूर्तिकार।

3. (क) मासिक, (ख) जो पढ़ाता है,
(ग) सैनिक, (घ) अभिनेता,
(ङ) विदेशी।

(घ) अनेकार्थी शब्द

1. (ख)सोना–
(क्रिया) – हमें दिन में नहीं सोना चाहिए।
(संज्ञा) – सोना पीले रंग की बहुमूल्य धातु है।
(ग) पत्र–
(चिट्ठी) – कल मेरे भाई का पत्र आया था।
(पत्ता) – शिवजी पर बेल-पत्र चढ़ाए जाते हैं।
(घ) जल–
(पानी) – गंगा का जल अमृत के समान है।
(जल जाना)– कल आग में एक दुकान जल गई।

2. **उत्तर**– एक दिशा, जवाब।
कल– मशीन, चैन।
व्यंजन– व्यंजन वर्ण, पकवान।
गला–कंठ, सड़ा हुआ।

3. **कुल**– सब, वंश,
पृष्ठ– पीठ, किताब का पेज (पन्ना)।
कर– हाथ, किरण,
अंबर– आसमान, वस्त्र।

(ङ) समूहवाची शब्द

1. (क) गड्डी, (ख) गुच्छा,
(ग) रेबड़, (घ) गट्ठर।

2. (क) मंडली, (ख) झुण्ड,
(ग) दल, (घ) भीड़,
(ङ) जोड़ा।

3. (1) राजा, (2) बीस,
(3) लाल, (4) किसान,
(5) लालची, (6) मोची,
(7) नयन, (8) रात्रि,

(9) भीड़, (10) सहपाठी,
(11) जाना, (12) पुत्र,
(13) जवान, (14) जलेबी।

अध्याय–12

मुहावरे (Idioms)

1. **मुँह में पानी आना**- मन ललचाना,
   टाँग अड़ाना- बाधा डालना,
   नाक में दम करना- बहुत परेशान करना,
   हवा से बातें करना- तेज दौड़ना,
   आँख का तारा होना- बहुत प्यारा होना।
2. टाँग अड़ाना, नौ दो ग्यारह होना, लाल-पीला होना, अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना।
3. (क) गहरी नींद में सोना,
   (ख) बहुत परेशान करना,
   (ग) चुगली करना,
   (घ) आश्चर्य में पड़ना,
   (ङ) आश्चर्य में पड़ना,
   (च) डर जाना।

अध्याय–13

पत्र–लेखन (Letter-Writing)

1. सेवा में,
   श्रीमान् प्रधानाचार्य
   शारदा बाल विद्या मंदिर
   जोधपुर (राज.)
   दिनांक: 12-11-20_ _
   महोदय,
   सविनय निवेदन है कि मेरे बड़े भाई का विवाह दिनांक 15-11-20_ _ को होना निश्चित हुआ है। विवाह के विभिन्न समारोहों में सम्मिलित होने के कारण मैं पाँच दिन विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकूँगा। अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे दिनांक 12-11-20_ _ से 16-11-20_ _ तक पाँच दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।
   आपका आज्ञाकारी शिष्य
   अंकित अग्रवाल
   कक्षा-3 (ब)
2. 145, प्रताप नगर
   उदयपुर (राज.)
   दिनांक: 5-9-20_ _
   प्रिय मयंक,
   सप्रेम नमस्ते।
   तुम्हारी बहन के शुभ विवाह का निमंत्रण-पत्र मिला। विवाह समारोह में होने वाले कार्यक्रम को पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। खेद है कि परीक्षाएँ होने के कारण मैं विवाह समारोह में सम्मिलित नहीं हो पाऊँगा। मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आदणीया बहन को उपहार-स्वरूप चूड़ियों का एक सैट भेजा है, आशा है उन्हें पसंद आएगा। पूज्य चाचा जी एवं चाचीजी को मेरा प्रणाम कहना।
   तुम्हारा मित्र
   नंदन उपाध्याय
3. 45, आदर्श नगर
   कोटा (राज.)
   दिनांक: 15-7-20_ _
   प्रिय लोकेश,
   सप्रेस नमस्ते।
   तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं बीस जुलाई को अपना जन्मदिन मना रहा हूँ। इस अवसर पर दिन में हवन-पूजन तथा सायंकाल गीत-संगीत के साथ-साथ प्रीतिभोज का आयोजन किया गया है। हमारे सभी मित्र इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। तुम भी अवश्य आना, भूल मत जाना।
   तुम्हारा मित्र
   रोहित वर्मा

अध्याय–14

निबंध–लेखन (Essay-Writing)

1. (क) निबंध का अर्थ है- अच्छी तरह बँधा हुआ अर्थात् सुव्यवस्थित।
   (ख) निबंध लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(1) निबंध लिखने से पूर्व उस विषय की जानकारी होनी चाहिए।
(2) निबंध लिखने में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।
(3) निबंध की भाषा सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।
(4) निबंध में किसी भी बात को दुहराना नहीं चाहिए।
(5) विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए।

2. **(क) हमारा राष्ट्रीय ध्वज**

प्रत्येक राष्ट्र का अपना राष्ट्र ध्वज होता है जो उसके गौरव का प्रतीक होता है। हमारे भारत का राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' है। इसमें केसरिया, सफेद तथा हरा-ये तीन रंग हैं। इसीलिए इसे 'तिरंगा' कहा जाता है। इसमें केसरिया रंग सबसे ऊपर सफेद रंग बीच में तथा हरा रंग नीचे है। बीच वाली सफेद पट्टी पर नीले रंग में एक चक्र अंकित है। जिसमें चौबीस धारियाँ है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज का केसरिया रंग भारतीय वीरों के शौर्य एवं बलिदान का प्रतीक है। बीच का सफेद रंग भारतीयों की शांति एवं अहिंसा की परंपरा का प्रतीक है। नीचे वाली पट्टी का हरा रंग हमारी समृद्धि का प्रतीक है तथा सफेद पट्टी पर अंकित अशोक चक्र हमारी प्रगति का प्रतीक है। 15 अगस्त के दिन स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान भारत के प्रधानमंत्री दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा फहराते हैं। इसी तिरंगे झण्डे के नीचे हमने आजादी की लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों को भारत से भगाकर देश की सत्ता अपने हाथों में सँभाली हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए तथा इसके गौरव की रक्षा के लिए प्राण-पण से तैयार रहना चाहिए।

(ख) रक्षाबंधन

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। त्योहार हमारे जीवन में खुशी एवं उमंग लेकर आते हैं। भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। उनमें से एक है- रक्षाबंधन। यह त्योहार सावन के महीने में पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन ब्राह्मण लोग नदियों तथा सरोवरों के किनारे कुछ विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, अत: इसे श्रावणी-पर्व भी कहते हैं।

रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र प्रेम का पर्व है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बाँधती हैं तथा उसकी दीर्घायु एवं सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। भाई भी अपनी बहनों को दान-दक्षिणा एवं उपहार आदि देकर उन्हें प्रसन्न करते हैं तथा संकट के समय उनकी रक्षा करने का व्रत लेते हैं।

इस दिन ब्राह्मण लोग प्राय: अपने यजमानों की कलाई में रक्षा सूत्र (राखी) बाँधकर उनके सुख-समृद्धि की मंगल कामना करते हैं। यजमान भी उन्हें दान-दक्षिणा देकर प्रसन्न करते हैं। इस दिन हिन्दुओं के घर में मीठी सेंबइयाँ एवं खीर बनाई जाती है। बाजारों में घेबर एवं फैनी बड़े पैमाने पर बनाई जाती हैं। इस दिन नव विवाहित युवा अपनी ससुराल जाकर इस पर्व को मनाते हैं। इस प्रकार यह पर्व बड़े आनन्द एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है।

(ग) कोरोना वायरस (कोविड-19)

कोरोना वायरस एक संक्रामक बीमारी है। इसे आमतौर पर कोविड-19 कहा जाता है। यह सर्वप्रथम मनुष्य के श्वसन प्रणाली को प्रभावित करता है जिससे साँस लेने में कठिनाई होती है। यह छुआ-छूत की बीमारी है। इसने सारे विश्व को प्रभावित कर रखा है और दुनिया में आग की तरह फैल रही है। इस वायरस की पहचान सबसे पहले 2019 में चीन के वुहान शहर से हुई थी। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोविड-19 से बचने के लिए कुछ दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए। एल्कोहल आधारित हैण्ड-रब का इस्तेमाल करना चाहिए। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए खानपान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। घर से बाहर निकलते समय मॉक्स का उपयोग करना चाहिए। याद रखिए, सावधानी ही इसका बेहतर इलाज है।

अध्याय–15

कहानी–लेखन (Story-Writing)

1. (क) कहानी की भाषा सरल एवं रोचक होनी चाहिए।
(ख) कहानी के अंत में उससे मिलने वाली शिक्षा लिखना आवश्यक है।

2. **नोट**- कहानी में दिए गए सभी रिक्तस्थानों में क्रमशः निम्नलिखित शब्दों को लिखकर कहानी पूरी करें।

(आलसी टिड्डा)

एक जंगल में एक चींटी और एक टिड्डा रहते थे। चींटी बहुत मेहनती थी परंतु टिड्डा बहुत आलसी था। वह पूरे दिन सोता तथा उछल-कूद करता रहता था। चींटी बरसात के दिनों के लिए कड़ी मेहनत करके अन्न इकट्ठा करती, परंतु टिड्डा कुछ काम नहीं करता था। चींटी उससे अन्न इकट्ठा करने को कहती तो वह बहाना बना देता। उसने बरसात के दिनों के लिए अन्न का एक भी दाना इकट्ठा नहीं किया।

बरसात का मौसम आ गया। कई दिनों से लगातार बारिश हो रही थी। चींटी के पास अपने परिवार के लिए खाने-पीने की पूरी व्यवस्था थी, परंतु टिड्डे के पास कुछ न था। जब कई दिनों तक बारिश नहीं रुकी तो टिड्डा भीगता हुआ चींटी के पास आया और बोला—"चींटी बहन! मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ। मुझे कुछ अन्न दे दो। मैं वर्षा के रुकने पर तुम्हें वापस कर दूँगा।" टिड्डे की यह बात सुनकर चींटी को क्रोध आ गया, वह क्रोध से बोली—"मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया पर तुमने कुछ नहीं किया। अब तुम भूखे मरो, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती।" चींटी की यह बात सुनकर टिड्डा अपना-सा मुँह लेकर बारिश में भीगता हुआ अपने घर वापस चला गया।

3. **घमंडी खरगोश**

किसी जंगल में एक खरगोश रहता था। खरगोश के बिल के पास ही एक तालाब में एक कछुआ भी रहता था। खरगोश को अपनी तेज चाल पर बहुत घमंड था। वह अक्सर कछुए की धीमी चाल की मजाक उड़ाता रहता था। एक दिन उसने कछुए को दौड़ के लिए ललकारा। कछुए ने खरगोश की चुनौती स्वीकार कर ली। दोनों ने दौड़ना शुरू किया। खरगोश कुछ ही देर में काफी दूर निकल आया। उसने सोचा, 'कछुआ तो बहुत पीछे रह गया है। थोड़ी देर आराम ही कर लेता हूँ।' खरगोश एक पेड़ के नीचे लेट गया, थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गयी कछुआ लगातार चलता रहा। उसने पेड़ के नीचे खरगोश को सोते हुए देखा। उसने खरगोश से कुछ नहीं कहा और आगे बढ़ गया। कुछ देर बाद खरगोश की नींद खुली। वह तेजी से लक्ष्य की ओर दौड़ा किन्तु कछुआ पहले ही मौजूद था। कछुआ दौड़ जीत चुका था। खरगोश अपनी हार पर बहुत शर्मिन्दा हुआ।

शिक्षा- घमंडी का सिर नीचा।

●●

हिन्दी व्याकरण एवं रचना 4

अध्याय–1

भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

1. (क) अपने विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करने के माध्यम को भाषा कहते हैं।
   (ख) प्रत्येक भाषा की ध्वनियों को लिखने के लिए अलग-अलग चिह्न निश्चित हैं। इन्हीं चिह्नों को लिपि कहा जाता है।
   (ग) भाषा को शुद्ध रूप में बोलने, लिखने तथा पढ़ने के लिए कुछ नियम हैं। इन नियमों को सिखाने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।
2. (क) व्याकरण (ख) लिपि
   (ग) भाषाएँ (घ) गुरुमुखी
   (ङ) देवनागरी।
3. (क) [✗], (ख) [✗],
   (ग) [✓], (घ) [✓],
   (ङ) [✗]
4. भारत- हिंदी- देवनागरी; इंग्लैंड- अंग्रेजी-रोमन; नेपाल-नेपाली-देवनागरी; ऑस्ट्रेलिया-अंग्रेजी-रोमन; चीन-चीनी-चीनी लिपि।
5. (क) भाषा, (ख) गुजराती,
   (ग) अंग्रेजी, (घ) हिंदी।

अध्याय–2

वर्ण एवं मात्राएँ
(Letters and Symbols of Vowels)

1. (क) भाषा की मूलध्वनि के बोले और लिखे जाने वाले रूप को वर्ण कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं।
   (ख) वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में तैंतीस व्यंजन हैं।
   (ग) अयोगवाह तीन हैं- अं, अँ तथा अः। इनके नाम क्रमशः अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग हैं। इनके चिह्न क्रमशः (ं), (ँ) तथा (:) हैं।
2. (क) वर्ण, (ख) अंग्रेजी,
   (ग) स्वर, (घ) स्वर।
3. स्त - अस्त, व्यस्त;
   न्न - अन्न, सन्न;
   क्ख - मक्खी, अक्खड़;
   च्च - सच्चा, बच्चा;
   क्त - मुक्त, रिक्त;
   ल्ल - लल्ला, बल्ला;
   ख्त - तख्त, सख्त;
   क्क - चक्की, पक्की।
4. (र्‍)- फर्क, तर्क (्र) - ट्रक, ड्रम
   (्र) जिक्र, फिक्र।
5. (ड़) लड़ाई, बड़ाई, (ढ़) चढ़ाई, पढ़ाई ।

अध्याय–3

शब्द एवं वाक्य
(Words and Sentences)

1. (क) वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
   (ख) शब्दों के सार्थक एवं क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं।
   (ग) वाक्य के दो अंग होते हैं। (घ) गुलाब, बगुला।
2. (क) [✓] (ख) [✗]
   (ग) [✗] (घ) [✓]
3. (क) लोमड़ी, (ख) लड़का,
   (ग) सूरज, (घ) खाना,
   (ङ) पढ़ाई, (च) परीक्षा।
4. (क) छात्र परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं।
   (ख) सचिन क्रिकेट खेल रहा है।
   (ग) मैं कल जयपुर जाऊँगी।
   (घ) माँ चाय बना रही है।
   (ङ) मेरा विद्यालय बहुत बड़ा है।
5. (क) उद्देश्य, (ख) वाक्य,
   (ग) वर्णों के, (घ) वाक्य।

6.

क्रम	उद्देश्य	विधेय
(क)	हम	परसों आगरा जाएँगे।
(ख)	रीना	अपना गृहकार्य कर रही है।
(ग)	आकाश में	बहुत से पक्षी उड़ रहे हैं।
(घ)	मैं	तीन दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
(ङ)	तुम	शाम को मेरे घर आना।

अध्याय–4

संज्ञा (Noun)

1. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। यह तीन प्रकार की होती है।
   (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु स्थान या पशु-पक्षी को बोध होता है; जबकि जातिवाचक संज्ञा से एक ही जाति या वर्ग के सभी व्यक्तियों, पशु-पक्षियों, वस्तुओं तथा स्थानों का बोध होता है।
   (ग) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**– विकास यादव, श्रीरामचरितमानस, हिमालय।
   जातिवाचक संज्ञा– छात्र, पुस्तक, पर्वत।
   भाववाचक संज्ञा– खटास, मिठास, बचपन।
2. (क) [✓] (ख) [✗]
   (ग) [✗] (घ) [✓]
   (ङ) [✗]
2.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
कुतुबमीनार	बच्चा	सुन्दरता
आगरा	शहर	चढ़ाई
महाभारत	पेड़	पागलपन
जनवरी	खिलाड़ी	चतुराई
सूर्य	पेंसिल	कड़वाहट

4. (क) व्यक्तिवाचक (ख) भाववाचक
   (ग) जातिवाचक (घ) जातिवाचक
   (ङ) व्यक्तिवाचक।
5. (क) नाम (ख) जातिवाचक
   (ग) व्यक्तिवाचक (घ) लड़कपन।

अध्याय–5

लिंग (Gender)

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।
   (ख) लिंग दो प्रकार के होते हैं–
   (i) पुल्लिग; जैसे- हाथी, घोड़ा, ऊँट।
   (ii) स्त्रीलिंग; जैसे- हथिनी, घोड़ी, ऊँटनी।
   (ग) पुरुष-जाति का बोध कराने वाले शब्द-रूप पुल्लिग होते हैं; जैसे मामा, चोर, चूहा; जबकि स्त्री-जाति का बोध कराने वाले शब्द रूप स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे-मामी, चोरनी, चुहिया।
2. (क) [✓] (ख) [✗]
   (ग) [✗] (घ) [✓]
   (ङ) [✓]
3. (ख) सेठानी-सेठ, (ग) पुत्र-पुत्री,
   (घ) शिक्षिका-शिक्षक,(ङ) दादा-दादी।
4. **आलू** - पुल्लिग, **मछली** - स्त्रीलिंग,
   कुर्सी - स्त्रीलिंग, **पहाड़** - पुल्लिग,
   नदी - स्त्रीलिंग, **दूध** - पुल्लिग,
   घड़ी - स्त्रीलिंग, **मटका** - पुल्लिग।
5. (क) धोबिन कपड़े धो रही है।
   (ख) बँदरिया नाच रही है।
   (ग) कवयित्री ने सुन्दर कविता लिखी।
   (घ) वह एक अच्छी गायिका है।
   (ङ) रानी ने सेविका की प्रशंसा की।
6. चूहा – पुल्लिग, कुम्हार – पुल्लिग,
   डॉक्टर साहब – पुल्लिग, मौसा – पुल्लिग,
   सामग्री – स्त्रीलिंग, धोबी – पुल्लिग
   भेड़िया – पुल्लिग, तितली – स्त्रीलिंग,
   अभिनेत्री – पुल्लिग।

अध्याय–6

वचन (Number)

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं–

(i) एकवचन (ii) बहुवचन।

(ख) एकवचन शब्द-रूप से किसी एक प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध होता है, जैसे- गाय, पुस्तक, पाठशाला, जबकि बहुवचन शब्द-रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध होता है; जैसे-गायें, पुस्तकें, पाठशालाएँ।

2. (क) आँसू , (ख) हैं ,
(ग) गुड़ियाँ , (घ) मछलियाँ।
3. (ख) बहुवचन (ग) बहुवचन
(घ) एकवचन
4. (क) भीड़, (ख) लोग,
(ग) बाल, (घ) मछलियाँ।

अध्याय–7

सर्वनाम (Pronoun)

1. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, हम, तुम, आप, वे, वह आदि।

(ख) सर्वनाम के छः भेद हैं-
(i) पुरुषवाचक सर्वनाम,
(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम,
(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम,
(iv) संबंधवाचक सर्वनाम,
(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा
(vi) निजवाचक सर्वनाम।

2. (क) मैं - पुरुषवाचक,
(ख) जो - वह-संबंधवाचक,
(ग) कुछ - अनिश्चयवाचक,
(घ) तुम - पुरुषवाचक, क्या-प्रश्नवाचक,
(ङ) यह - निश्चयवाचक।

3. (किसान) वह (आदमी) (कड़वा) वे
जो (सुंदर) किसका (उल्लू) उसका
कुछ क्या हमारे (कपड़े) (आलस)
मेरा यह (गाना) (चालाक) स्वयं
(फूल)

4. नोट- क्रमशः निम्नलिखित शब्दों को रिक्त स्थानों भरकर अनुच्छेद पूरा करें-
(i) वह (ii) मैं, (iii) वे, (iv) उनसे,
(v) हम, (vi) कौन, (vii) जो, (viii) वही।
5. (क) संज्ञा के, (ख) प्रश्नवाचक,
(ग) निजवाचक, (घ) निश्चयवाचक।

अध्याय–8

विशेषण (Adjective)

1. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं; जबकि जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं; जैसे- बाग में मीठे आम मिल रहे हैं। यहाँ 'मीठे' विशेषण तथा 'आम' विशेष्य है।

(ख) विशेषण के चार भेद हैं- (i) गुणवाचक विशेषण; जैसे-अच्छा, मीठा, ऊँचा; (ii) संख्यावाचक विशेषण, जैसे-दो, चार, कुछ; (iii) परिमाणवाचक विशेषण; जैसे-दो किलो, चार लीटर, थोड़ा-सा; (iv) संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण; जैसे- यह, वह, वे आदि।

(ग) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अर्थात् माप-तौल के बारे में बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे-दो किलो चीनी, तीन मीटर कपड़ा, थोड़ा-सा दूध तथा ढेर-सारे चावल आदि।

(घ) गुणवाचक विशेषण संज्ञा के गुण-दोष, आकार, रंग, स्वाद आदि का बोध कराते हैं; जैसे- मीठा आम, काला कौआ; जबकि संख्यावाचक विशेषण संज्ञा शब्दों की निश्चित या अनिश्चित संख्या बताते हैं; जैसे-चार आम, तीन लड़कियाँ, कुछ लड़के।

2. (क) कपड़ा, (ख) चार मीटर काला,
(ग) रसीला, (घ) हाथी।
3. एक पेड़;
एक हरा पेड़;
एक हरा घना पेड़;
एक हरा घना विशाल पेड़।

एक गुलाब;
एक लाल गुलाब;
एक लाल कोमल गुलाब,
एक लाल कोमल सुगंधित गुलाब।
एक तितली;
एक नन्ही तितली;
एक नन्ही सुंदर तितली;
एक नन्ही सुन्दर रंग-बिरंगी तितली।

4. खूँखार शेर, वफादार कुत्ता,
फुर्तीली गिलहरी, रंग-बिरंगा मोर,
मोटा हाथी, रंग-बिरंगी तितली,
चालाक लोमड़ी, नकलची बंदर,
हरा तोता, काला कौला।

5. विशाल - पेड़, कंजूस - आदमी,
कच्ची - सड़क, गरम - चाय,
मीठा - आम, ठंडी - आइसक्रीम।

6. थोड़ा - परिणामवाचक, प्यासा - गुणवाचक,
बुरा - गुणवाचक, चार - संख्यावाचक,
गोरा - गुणवाचक, भूखा - गुणवाचक,
तीखा - गुणवाचक, कुछ - परिणामवाचक,
ज्ञानी - गुणवाचक, काला - गुणवाचक,
सुंदर - गुणवाचक, नीचा - गुणवाचक।

अध्याय–9

क्रिया एवं काल (Verb and Tenses)

1. (क) जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। क्रिया दो प्रकार की होती है- (i) सकर्मक तथा (ii) अकर्मक।
(ख) सकर्मक क्रिया के साथ कर्म होता है; जैसे-राम आम खा रहा है; जबकि अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता; जैसे-हरि दौड़ रहा है।
(ग) क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का समय ज्ञात हो, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं-(i) भूतकाल, (ii) वर्तमानकाल, (iii) भविष्यत्काल।

2. (क) जाएँगे- भविष्यत्काल,
(ख) गए थे- भूतकाल,
(ग) टहलती- वर्तमानकाल,
(घ) खा रहा- भूतकाल,
(ङ) गिरते- वर्तमानकाल।

3. **करना**-सो गई, खा लिया, नाच रही है।
होना- हो रही है, हुई थी, उगेगी।

4. (ख) पतंग-अकर्मक, (ग) बच्चा-अकर्मक,
(घ) नानी-सकर्मक, (ङ) मीरा-सकर्मक।

5. (क) काम, (ख) दो,
(ग) भूत-भविष्यत् दोनों,
(घ) क्रिया।

6. पीना - पिया - पी रही है - पिएगी
सोना - सोया - सो रही है - सोएगी
नाचना - नाचा - नाच रही है - नाचेगी
खाना - खाया - खा रही है - खाएगी
होना - हुआ - हो रही है - होगी

अध्याय–10

विराम–चिह्न (Punctuation-Mark)

1. (क) विराम का अर्थ है– रुकना। लिखते समय अपने भावों तथा विचारों को स्पष्ट करने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
(ख) विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग हर्ष, विषाद, शोक, घृणा, आश्चर्य, प्रशंसा आदि भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है।

2. (क) आप कहाँ रहती हैं?
(ख) अरे ! तुम फिर आ गए।
(ग) माँ ने कहा, ''तुम पढ़ाई करो।''
(घ) यह पुस्तक किसकी है?
(ङ) हँसो, मत रोओ।
(च) छिः ! दूर हटो।
(छ) हाथी धीरे-धीरे चल रहा है।
(ज) राजू, ज्योति और राधा कहाँ हैं?

3. (क) [✗] (ख) [✗]
(ग) [✗] (घ) [✔]

अध्याय–11

शब्द–भंडार (Vocabulary)

(क) पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

1. आँख – नयन, दृग, लोचन ।
   बादल – नीरद, जलद, घन ।
   झंडा – ध्वजा, पताका, निशान ।
   गणेश – गजानन, गणपति, विनायक।
2. (शीर्षक) (धन्यवाद) (पत्ती) (राजकुमार) (भूपति)
3. (ख) नदी–
   तटिनी – <u>तटिनी</u> दो तटों के बीच बहती है।
   सरिता – <u>सरिता</u> का जल बहता रहता है।
   तरंगिनी – <u>तरंगिनी</u> की लहरें मचल रही हैं।
   (ग) बादल–
   घन – काले <u>घन</u> जल बरसाते हैं।
   जलद – जल को देने वाला <u>जलद</u> कहलाता है।
   मेघ – <u>मेघ</u> से मेह बरसता है।

(ख) विलोम शब्द (Antonyms)

1. (क) अहिंसा, (ख) दु:ख,
   (ग) जीतता, (घ) आजादी।
2. खोना, पाना, अनुचित, अनुकूल, उजाला।
3. (क) निर्धन, (ख) कुपुत्र,
   (ग) पाताल, (घ) निराशा।

(ग) अनेकार्थक शब्द (Words with Various Meanings)

1. (क) कर –
   हाथ – मोदी जी ने अपने कर-कमलों द्वारा प्रतिमा का अनावरण किया।
   टैक्स – हमें अपने करों का भुगतान समय से करना चाहिए।
   (ख) वर –
   दूल्हा – रागिनी का वर तो बहुत बातूनी है।
   वरदान – दशरथ से कैकेयी ने अपने दो वर माँगे।
   (ग) तीर –
   बाण – शिकारी ने मृग को तीर से मार डाला।
   किनारा – नदी के तीर पर शीतल हवा चलती है।
2. (क) पात्र – (i) कलाकार, (ii) बर्तन।
   (ख) आम – (i) एक फल, (ii) सार्वजनिक।
   (ग) वर – (i) दूल्हा, (ii) वरदान।
3. (क) (आकृति) (ख) (वस्त्र)
   (ग) (पत्ता) (घ) (वंश)
4. (क) कल, (ख) उत्तर,
   (ग) भूत

(घ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
(One Word Substitution)

1. (क) जिसका बहुत मूल्य हो,
   (ख) जहाँ पुस्तकों का संग्रह हो,
   (ग) सत्य बोलने वाला,
   (घ) धर्म में विश्वास रखने वाली,
   (ङ) साथ पढ़ने वाला।
2. (क) हस्तलिखित, (ख) निराकार,
   (ग) अदृश्य, (घ) संवाददाता,
   (ङ) ग्रामीण।
3. (क) अपठित, (ख) वार्षिक,
   (ग) खंडित, (घ) मूक,
   (ङ) निराकार।

(ङ) समश्रुति भिन्नार्थक शब्द (Homonyms)

1. (क) गृह, (ख) हंस,
   (ग) जरा, (घ) निश्चित,
   (ङ) बहार।
2. (ख) अचला = पृथ्वी, अचल = पर्वत;
   (ग) बड़ा = विशाल, बढ़ा = आगे गया।
   (घ) आसमान = आकाश,
   असमान = जो एक जैसा न हो।
3. (ख) जिनका उच्चारण लगभग समान हो, लेकिन अर्थ भिन्न हो।
4.

अध्याय–12

अशुद्धि–संशोधन
(Error-Improvement)

1. त्योहार, विद्यार्थी कृपया, सदैव, दण्ड, परीक्षा, उदाहरण, कवि, बुद्धि, चिह्न।
2. (क) आशीर्वाद, (ख) लकड़ी, (ग) आज्ञा, (घ) पुरस्कार, (ङ) राई।
3. (क) प्रत्येक को चार-चार मिठाइयाँ दे दो।
   (ख) सड़क पर बीच में मत चलो।
   (ग) मुझे विद्यालय जाना है।
   (घ) उसकी शादी में वर्षा होने से विघ्न पड़ गया।
   (ङ) तुमने उससे झगड़ा क्यों किया ?
   (च) वे लोग अभी नहीं आए हैं।
   (छ) आपने यह क्या कर दिया ?
   (ज) क्या उन्होंने ताजमहल देखा है ?

अध्याय–13

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
(Idioms and Proverbs)

1. एक लोमड़ी थी। भू से उसके पेट में चूहे रहे थे। तभी उसने पेड़ पर बैठे एक कौए की चोंच में रोटी देखी। रोटी देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। उसे भूख से व्याकुल देखकर कौए ने उसे आधी रोटी देनी चाही। परंतु लोमड़ी पूरी रोटी चाहती थी। उसने कौए की तारीफों के पुल बाँधने शुरू कर दिया। परंतु कौए के कान पर जूँ नहीं रेंगी। तभी वहाँ एक शिकारी कुत्ता आ गया। उसे देखकर लोमड़ी भीगी बिल्ली बन गई और नौ-दो ग्यारह हो गई। उसने आधी रोटी न लेकर अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मार ली।
2. क्रमशः लोकोक्तियों के अर्थ–
   (i) एक प्रयत्न से दो कार्य पूरे होना।
   (ii) कार्य के अनुसार परिणाम होना।
   (iii) परिस्थिति के अनुसार कार्य करना ।
   (iv) सत्य की ही विजय होती है।
   (v) बहुत अनुभवी होना।
   (vi) दोनों ओर से परेशानी होना।
3. क्रमशः अर्थों को व्यक्त करने वाली लोकोक्तियाँ–
   (i) नौ नगद न तेरह उधार ।
   (ii) एक चुप सौ को हराती है।
   (iii) करेला और नीम चढ़ा ।
   (iv) खोदा पहाड़ निकली चुहिया ।
   (v) घर का भेदी लंका ढाए ।
   (vi) जल में रहकर मगर से बैर ।

अध्याय–14

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश
(Unseen Passage and Extract)

1. (1) स्वतंत्रता-दिवस (2) हमारा देश लगभग दो सौ वर्ष तक विदेशी शासकों के अधीन रहा और 15 अगस्त, 1947 को स्वाधीन हुआ । (3) आजादी के लिए प्राण न्योछावर करने वाले कुछ वीरों के नाम हैं– चंद्रशेखर 'आजाद', सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय। (4) स्वतंत्रता-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन सभी सरकारी दफ्तरों, स्कूलों में तिरंगा फहराया जाता है, अनेक कार्यक्रम होते हैं, सभी संस्थानों में अवकाश रखा जाता है व मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। (5) स्वतंत्रता-दिवस के दिन दिल्ली के लालकिले पर देश के प्रधानमंत्री झंडा फहराते हैं।
2. (1) रक्षाबंधन (2) भारत को अलबेला इसलिए बताया गया है क्योंकि यहाँ हर ऋतु में त्योहार और हर महीने मेले लगते हैं। (3) सावन के महीने में रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाता है।(4)भाई-बहनों का नाता राखी से बँध जाता है।

अध्याय–15

पत्र–लेखन (Letter-Writing)

1. (क) एक अच्छे पत्र के लिए आवश्यक है कि इसकी भाषा आसान हो, इसे कम शब्दों में स्पष्टतः लिखा जाए तथा इसकी लिखावट साफ हो।
   (ख) डाकिया को परेशानी से बचाने के लिए पत्र पर स्पष्ट शब्दों में पता अंकित होना चाहिए।

2. सेवा में,
प्रधानाध्यापक
नेहरू बाल मंदिर
अशोक नगर, बीकानेर (राज.)
दिनांक : 8 जुलाई, 20 _ _
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा-4 (अ) का छात्र हूँ। मेरे पिताजी एक निजी संस्थान में लिपिक हैं। उनका वेतन मात्र ₹ 12000 प्रतिमाह है । परिवार में हम तीन भाई-बहन हैं और हम सभी इसी विद्यालय में पढ़ते हैं। हमारे परिवार की आय का कोई अन्य स्रोत नहीं है, अत: घर का खर्च बहुत कठिनाई से चलता है। यही कारण है कि पिताजी मेरी पाठ्यपुस्तकें खरीदने में असमर्थ हैं। अत: श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि मुझे कक्षा-4 की समस्त पाठ्यपुस्तकें पुस्तकालय से दिलवाने की कृपा करें।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अनुपम मिश्र कक्षा-4 (अ)

3. 25-बी, इन्दिरा नगर
सवाई माधोपुर (राज.)
दिनांक : 2-11-20 _ _
प्रिय मिताली,
सप्रेम नमस्ते ।
आशा है तुम सपरिवार सानंद होगी। घर में दीपावली की तैयारियाँ चल रही होंगी। हमारे यहाँ भी महालक्ष्मी पूजन की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही हैं। आपको दीपावली की शुभकामनाएँ; ईश्वर करे कि यह प्रकाश-पर्व आपके जीवन में सुख-समृद्धि लाये। आदरणीय चाचा जी और चाची जी को मेरा प्रणाम कहना।
तुम्हारी सखी - शालिनी।

अध्याय–16

कहानी–लेखन (Story-Writing)

1. बॉक्स में से निम्नलिखित शब्दों को चुनकर क्रमश: रिक्त स्थानों में भरिए तथा कहानी पूरी कीजिए–
(i) गाँव (ii) जंगल (iii) चराने (iv) शरारत (v) पेड़ (vi) चिल्लाने (vii) दौड़ो-दौड़ो (viii) भेड़िया (ix) सहायता (x) मुस्कुराते (xi) भला-बुरा (xii) बकरियाँ (xiii) भयभीत (xiv) बचाओ (xv) सचमुच (xvi) कोई (xvii) झूठ (xviii) मूर्ख (xix) मार (xx) घायल।

2. **खट्टे अंगूर**
किसी जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। एक दिन वह बहुत भूखी थी। वह भोजन की खोज में जंगल में घूम रही थी। अचानक उसे एक बाग नजर आया। वह बाग में गई । वहाँ पके हुए अंगूरों के गुच्छे देखकर वह बहुत खुश हुई। वह अंगूर के गुच्छे पाने के लिए उछली, किन्तु अंगूरों के गुच्छे बहुत ऊँचाई पर थे। लोमड़ी कई बार तेजी से उछली किन्तु अंगूरों तक न पहुँच सकी। थक-हारकर लोमड़ी बाग से बाहर आ गई। अपने मन को समझाने के लिए उसने कहा–ये अंगूर खट्टे हैं। इन्हें खाकर मैं बीमार हो जाऊँगी, मुझे इन्हें नहीं खाना चाहिए।
शिक्षा–अपने दोष छिपाने के लिए लोग दूसरों पर आरोप मढ़ देते हैं।

अध्याय–17

निबंध–लेखन (Essay-Writing)

1. **निबंध का अर्थ है**–अच्छी तरह बँधा हुआ अर्थात् सुव्यवस्थित । जब किसी विषय पर एक व्यवस्थित क्रम में विचार प्रकट किए जाते हैं, तो वह रचना निबंध कहलाती है। निबंध लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें हैं–(i) सर्वप्रथम निबंध की रूपरेखा बनाएँ। (ii) निबंध की भाषा सरल तथा स्पष्ट रखें। (iii) एक ही बात को बार-बार न दोहराएँ। पूरा वर्णन क्रमश: अलग-अलग अनुच्छेदों में लिखें।

2. **दशहरा**
दशहरा हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है। इसे विजयादशमी भी कहते हैं। यह त्योहार आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। कहते हैं कि इसी दिन भगवान राम ने लंका के राजा रावण का वध किया था।
यह पर्व असत्य पर सत्य की, अन्याय पर न्याय की तथा अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। इस दिन क्षत्रिय लोग अपने शस्त्रों का पूजन करते हैं। प्राय: लोग अपने नये व्यापार का श्री गणेश इसी दिन करते

हैं। हिन्दुओं की नवरात्रि की देवी-पूजा इस दिन पूर्ण होती है, और माँ दुर्गा की प्रतिमाओं का विसर्जन इसी दिन किया जाता है।

दशहरा के दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का मंचन होता है। रावण, कुंभकर्ण तथा मेघनाद के पुतले जलाये जाते हैं और रंग-बिरंगी आतिशबाजी की जाती है। दशहरा राम की विजय तथा दुर्गापूजा— दोनों के रूप में मनाया जाता है। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, जो हमें असत्य, अन्याय तथा अधर्म के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देता है।

3. **श्रीमती इंदिरा गांधी**

श्रीमती इंदिरा गांधी का नाम भारत के यशस्वी राष्ट्रीय नेताओं में लिया जाता है। इनका वास्तविक नाम इंदिरा प्रियदर्शिनी था। इन्होंने विश्व में नारी शक्ति को राजनीतिक उच्चता के शिखर पर पहुँचाकर महिलाओं के सम्मान में चार चाँद लगाए।

श्रीमती इंदिरा गांधी का जन्म 19 नवम्बर, 1917 को प्रयाग राज के अपने पैतृक निवास 'आनंद भवन' में हुआ था। इंदिराजी अपने पिता पंडित जवाहरलाल नेहरू की इकलौती पुत्री थीं। इनकी माताजी का नाम श्रीमती कमला नेहरू था। श्री फिरोज गांधी से इनका विवाह हुआ था। इनके दो पुत्र थे। श्री राजीव गांधी इनके बड़े पुत्र थे तथा श्री संजय गांधी इनके छोटे पुत्र थे।

श्रीमती इंदिरा गांधी बचपन से ही राष्ट्र सेवा में रुचि रखती थी। अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांतिकारियों के संदेश पहुँचाने के लिए उन्होंने 'वानर सेना' नामक संगठन बनाया था। सन् 1962 में चीनी आक्रमण के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में उन्होंने अपने समस्त आभूषण दान कर दिए थे। नेहरू जी की मृत्यु के बाद लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में वे सूचना मंत्री बनीं । तत्पश्चात् उन्होंने प्रधानमंत्री पद सम्हाला।

इंदिरा गांधी के नेतृतव में भारत ने अभूतपूर्व प्रगति की। बैंकों का राष्ट्रीयकरण व राजाओं के प्रिवीयर्स की समाप्ति जैसे कदम उठाकर उन्होंने अपनी समाजवादी सोच का परिचय दिया। इंदिरा जी के नेतृत्व में ही सन् 1971 के युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को बुरी तरह हराकर 'बाँग्लादेश' नामक नये देश का निर्माण कराया। उन्होंने पंजाब से आतंकवाद का सफाया कर दिया। दुर्भाग्यवश 31 अक्टूबर, 1984 को वह स्वर्ग सिधार गईं।

4. **पं. जवाहरलाल नेहरू**

पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। इन्होंने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में एक अग्रणी सेनानी की भूमिका निभाई। स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी के रूप में इन्होंने अनेक आन्दोलनों में भाग लिया और कई बार जेल गए। अंततः 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया।

पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म प्रयागराज में 14 नवम्बर को हुआ । पं. नेहरू के जन्म दिन को आज भी 'बाल-दिवस' के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। नेहरू जी के पिताजी का नाम श्री मोतीलाल नेहरू तथा माताजी का नाम श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू था। मोती लाल नेहरू अपने समय के विख्यात वकील थे। जवाहरलाल जी का पालन-पोषण बड़े ही लाड़-प्यार से हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए ये इंग्लैण्ड गए और वहाँ से बैरिस्टर बनकर लौटे। इनका विवाह श्रीमती कमला नेहरू के साथ हुआ। इंदिरा प्रियदर्शिनी इनकी इकलौती पुत्री थी। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर इन्होंने वकालत छोड़ दी और भारत की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। इन्होंने अनेक आन्दोलनों में भाग लिया और कई बार जेल वर्षों तक जेल की कठोर यातनाएँ सहीं। भारत के स्वतंत्र होने के बाद ये भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। अपने परिश्रम एवं प्रतिभा के बल पर इन्होंने भारत की प्रगति में चार चाँद लगा दिए।

नेहरू जी सच्चे गांधीवादी थे। इन्होंने जीवन-भर सत्य-अहिंसा एवं विश्व-शान्ति की नीति का पालन किया। इन्होंने 'पंचशील' एवं 'गुट निरपेक्ष सम्मेलन' के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में शान्ति एवं तटस्थता का अलख जगाया। बच्चे इन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहते थे। 27 मई, 1964 को इनका स्वर्गवास हो गया।

●●

हिन्दी व्याकरण 5
एवं रचना

अध्याय–1

भाषा और व्याकरण

1. (क) अपने विचारों को प्रकट करने तथा दूसरों के विचार जानने के माध्यम को भाषा कहते हैं। भाषा के दो रूप हैं–
(1) मौखिक एवं (2) लिखित।
(ख) किसी भाषा को लिखने के लिए उसके वर्णों के निश्चित संकेत-चिह्नों के समूह को लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
(ग) किसी भी भाषा के बोलने तथा लिखने-पढ़ने के कुछ निश्चित नियम होते हैं। इन नियमों के समूह को व्याकरण कहा जाता है। किसी भाषा को शुद्ध रूप में पढ़ने, बोलने तथा लिखने के लिए उसके व्याकरण को जानना आवश्यक है।
2. (क) सीमित (ख) मौखिक
(ग) लिखित (घ) फारसी।
3. (क) [✗] (ख) [✗]
(ग) [✓] (घ) [✗]
4. (क) लिपि (ख) हिन्दी
(ग) देवनागरी (घ) 14 सितम्बर को।
5. (क) (iii) वर्ष 1949 में (ख) (iii) अंग्रेजी
(ग) (iii) मौखिक (घ) (iii) मौखिक।

●●

अध्याय–2

वर्ण–विचार

1. (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। हिन्दी-वर्णमाला में 44 वर्ण हैं।
(ख) स्वर के तीन भेद हैं–
(i) ह्रस्व स्वर (ii) दीर्घ स्वर तथा
(iii) प्लुत स्वर
(ग) अनुस्वार का उच्चारण नाक से होता है जबकि अनुनासिक का उच्चारण नाक के साथ मुँह से भी किया जाता है।
(घ) विसर्ग का उच्चारण 'अह्' होता है। इसका प्रयोग अधिकतर संस्कृत-शब्दों में होता है; जैसे–प्रायः, प्रातः, स्वतः, अन्ततः आदि।
(ङ) आगत स्वर 'ऑ' को कहा जाता है। यह अंग्रेजी भाषा से आया है तथा अंग्रेजी के शब्दों में प्रयुक्त होता है; जैसे–फ्रॉक, फॉल, बॉल आदि। आगत व्यंजन 'ज़' तथा 'फ़' हैं । अरबी तथा फ़ारसी भाषा के शब्दों में इनका प्रयोग किया जाता है; जैसे– ज़हर, ज़मीन, फ़िरदौस आदि।
2. (क) चाँदनी (ख) आँख
(ग) अंगूर (घ) पाँच
(ङ) व्यंजन
(च) बंदूक।
3. **ऑ** — डॉक्टर, बॉक्स, फॉक्स ।
ज़ — ज़रा, ज़ंग, ज़ख़्म ।
फ़ — फ़ीस, फ़ीता, फ़ैसला।
4. **वर्ण-विच्छेद**—र् + आ + म् + अ, ब् + इ + ल् + ल + ई, द् + इ + न् + ए + श् + अ, फ् + अ + व् + व् + आ, र् + आ, म् + अ + ह् + ए + श् + अ, क् + उ + त् + त् + आ, व् + इ + न् + अ + य् + अ, च् + इ + ल् + ल् + आ + न् + आ, द् + ई + प् + इ + क् + आ, न् + इ + य् + अ + म् + इ + त् + अ।
वर्ण-संयोग—तबला, शेर, ढोलक, भेड़िया, ठठेरा, चीतल, चमक, हथिनी, बकरी, जलेबी।
5. (क) (iii) विसर्ग (ख) (iii) ओ
(ग) (ii) क्षमा (घ) (i) ँ
(ङ) (iii) राष्ट्र।

●●

अध्याय–3

शब्द–विचार

1. (क) दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं । जैसे– जल, जगत, जलेबी, जनता आदि।

(ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं–
(i) तत्सम शब्द, (ii) तद्भव शब्द, (iii) देशज शब्द तथा (iv) विदेशी शब्द।

(ग) रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं–
(i) रूढ़ शब्द जैसे– घर, आँख पानी; (ii) यौगिक शब्द; जैसे– विद्यालय, दूधवाला तथा (iii) योग-रूढ़ शब्द; जैसे– जलज, वारिद, दशानन।

(घ) जो शब्दांश किसी शब्द के पहले जुड़कर उसे नया अर्थ देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे– कु + पुत्र = कुपुत्र, वि + योग = वियोग, बे + होश = बेहोश।

(ङ) जो शब्दांश किसी शब्द के पीछे जुड़कर उसे नया रूप तथा अर्थ देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।
जैसे– बुरा + आई = बुराई, खुश + ई = खुशी, सुख + द = सुखद।

2. **सार्थक शब्द–**सुनना, खाना, खिचड़ी, दलिया, रोटी, दही।
निरर्थक शब्द–उनना, वाना, बिचड़ी, वलिया, वोटी, वही।

3. हस्त - हाथ, घृत - घी, दुग्ध - दूध, मातृ - माता, अग्नि - आग, कर्ण - कान, पुत्र - पूत, नासिका - नाक, पाद - पैर, पितृ - पिता, गृह - घर, पत्र - पत्ता, दधि - दही, क्षेत्र - खेत ।

4. **उपसर्ग वाले शब्द –** सजल, विक्रय, बेगुनाह, सकुशल।
प्रत्यय वाले शब्द – जलज, मिठाई, गुनाहगार, बर्फीला।

5. अभाव – अ (उपसर्ग), घुड़की – ई (प्रत्यय), बेगुनाह – बे (उपसर्ग), बुराई – आई (प्रत्यय), चित्रकार – कार (प्रत्यय), अधजला – अध (प्रत्यय), सकुशल – स (उपसर्ग) कुबुद्धि – कु (प्रत्यय), सुपुत्र – सु (उपसर्ग), दुर्दिन – दुर् (उपसर्ग), भलाई – आई (प्रत्यय), प्रयोग – प्र (उपसर्ग), अधमरा – अध (उपसर्ग), खुशी – ई (प्रत्यय), सुयोग – सु (उपसर्ग), मददगार – गार (प्रत्यय)।

6. **रूढ़ शब्द –** घर, आँख, पानी।
यौगिक शब्द – कुपुत्र, हिमालय, दूधवाला।
योगरूढ़ शब्द – पंचानन, दशानन, वंशीधर।

●●

अध्याय–4

वाक्य–विचार

1. (क) शब्दों के क्रमबद्ध एवं सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं । वाक्य के दो भाग होते हैं–
(i) उद्देश्य तथा (ii) विधेय।

(ख) जिसके बारे में कुछ कहा जाए वह उद्देश्य कहलाता है, जबकि उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय कहा जाता है।

(ग) मयंक प्रतिदिन दूध पीता है।

2. (क) भरत की माता का नाम कैकेयी था।
(ख) मेरे घर के पास विद्यालय है ।
(ग) पिताजी अखबार पढ़ रहे हैं।
(घ) बंदर केले खा रहे हैं।
(ङ) कल तुम कहाँ जा रहे थे ?
(च) मैंने यह काम नहीं किया ।
(छ) उसका घर फूट गया है।

3.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	नारद जी	वीणा बजाते हैं।
(ख)	सीता	परिश्रमी है।
(ग)	लोमड़ी	चालाक होती है।
(घ)	हमने	रेगिस्तान में ऊँट देखे।
(ङ)	शेर	जंगल का राजा है।
(च)	राकेश	मेरा मित्र है।
(छ)	सूर्य	पूर्व में निकलता है।

●●

अध्याय–5

संज्ञा

1. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं;
जैसे–बालक, शेर, आम, लाल किला, क्रोध, प्रेम आदि।

(ख) एक ही वर्ग, जाति या प्रकार के प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों के नाम जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं;
जैसे—गाय, लड़के, फल, पुस्तकें आदि।

(ग) जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।
जैसे—अमिताभ बच्चन, ऐरावत, रामचरितमानस, ताजमहल आदि।

(घ) जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के गुण, दोष, भाव, अवस्था अथवा स्वभाव आदि का बोध होता है, वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे—सुन्दरता, मिठास, खटास, बचपन, बुढ़ापा आदि।

2. (ख) सूर्य (ग) देश
(घ) मिठाई (ङ) चिकनाहट।

3. (i) फूल (ii) पुस्तक
(iii) नदी (iv) देश
(v) स्थान (vi) नगर।

4. (क) (i) व्यक्तिवाचक (ख) (ii) जातिवाचक
(ग) (i) भाववाचक (घ) (i) व्यक्तिवाचक
(ङ) (iii) द्रव्यवाचक (च) (ii) समुदायवाचक।

●●

अध्याय–6

लिंग

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति या पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं । लिंग दो प्रकार के होते हैं।

(ख) **स्त्रीलिंग शब्द —** महिला, शेरनी, हथिनी, घोड़ी, गाय।
पुल्लिंग शब्द — पुरुष, शेर, हाथी, घोड़ा, बैल।

2. लड़की — लड़का,
अभिनेता — अभिनेत्री,
बलवान — बलवती
विद्वान — विदुषी,
पंडित — पंडिताइन,
सम्राट — सम्राज्ञी
नर मक्खी — मादा मक्खी,
श्रीमान — श्रीमती,
वर — वधू
बाल — बाला,
गुड्डा — गुड़िया,
गाय — बैल

3. **पुल्लिंग शब्द —** घड़ा, आम, गुलाब, सोमवार, भारत, पकोड़े।
स्त्रीलिंग शब्द — मटर, दादी, अप्रैल, यमुना, देवनागरी, ऐनक, बोतल, लीची।

●●

अध्याय–7

वचन

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं । हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं।

(ख) शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—पुस्तक, चिड़िया । शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।
जैसे—पुस्तकें, चिड़ियाँ।

2. बात — बातें, सेना — सेनाएँ,
वधू — वधुएँ, सड़क — सड़कें,
पंखा — पंखे, वस्तु — वस्तुएँ ।
महिल — महिलाएँ, लिपि — लिपियाँ,
चुहिया — चुहियाँ, कमरा — कमरे,
लड़की — लड़कियाँ, छात्र — छात्र।

3. (क) मक्खियाँ (ख) फूल
(ग) खिड़कियों (घ) सड़कें।

4. (क) मेरे चाचाजी आए हैं।
(ख) प्रधानमंत्री मोदीजी भाषण दे रहे हैं।
(ग) घोड़े हिनहिना रहे हैं।
(घ) मैंने आज मंदिरों के दर्शन कर लिये।

●●

अध्याय–8

कारक

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के उस रूप को जो वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध बताए, कारक कहते हैं। जैसे– राम ने पत्र लिखा, इस वाक्य में 'राम' कर्ता कारक है (पत्र किसने लिखा ? राम ने)।

   (ख) कारक में आठ भेद हैं– (1) कर्ता (2) कर्म (3) करण (4) संप्रदान (5) अपादान (6) संबंध (7) अधिकरण तथा (8) संबोधन।

   (ग) करण कारक से कार्य करने के साधन या उपकरण का बोध होता है; जैसे– राम कलम से लिखता है, इस वाक्य में लिखने का साधन कलम है, अतः यह करण कारक है। इसका चिह्न 'से' है। अपादान कारक का चिह्न भी 'से' है, किन्तु यह दूर होने का बोध कराता है। जैसे–पेड़ से फल गिरा, इस वाक्य में पेड़ से फल दूर होता है, अतः 'पेड़' अपादान कारक है।

   (घ) जिस शब्द से क्रिया के होने के आधार अर्थात् स्थान का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे– पेड़ पर बंदर बैठा है। राम पाठशाला में पढ़ता है। यहाँ 'पेड़' पर बैठने तथा 'पाठशाला' में पढ़ने की क्रिया होती है, अतः ये दोनों अधिकरण कारक हैं।

2. (क) राम – कर्ता,
   रावण – कर्म,
   बाण – करण ।

   (ख) बहन – कर्ता,
   भाई – संबंध,
   राखी – कर्म ।

   (ग) पिताजी – कर्ता,
   मेरे लिए – संप्रदान,
   पेन – कर्म ।

   (घ) मोहन – कर्ता,
   छत – अधिकरण,
   पतंग – कर्म ।

   (ङ) मोहन – संबंध,
   पिताजी – कर्ता,
   मिठाई – कर्म।

3. (क) (i) करण कारक, (ii) अपादान कारक;
   (ख) (i) अपादान कारक (ii) करण कारक;
   (ग) (i) करण कारक, (ii) अपादान कारक;
   (घ) (i) करण कारक (ii) अपादान कारक;
   (ङ) (i) करण कारक (ii) अपादान कारक।

4. (ख) **अरे !** – संबोधन कारक,
   (ग) **से** – अपादान कारक,
   (घ) **ने** – कर्ता कारक,
   (ङ) **को** – कर्म कारक ।

●●

अध्याय–9

सर्वनाम

1. (क) संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– रमा मेरी सहेली है। वह मेरे साथ ही पढ़ती है। यहाँ रमा संज्ञा है तथा वह सर्वनाम है।

   (ख) **सर्वनाम के छः भेद हैं–**(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) प्रश्नवाचक सर्वनाम (5) संबंधवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम।

   (ग) पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं– (1) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम; जैसे–मैं, हम, मेरा, हमारा; (2) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, जैसे–तुम, आप, तुम्हारा, आपका; (3) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, जैसे–वह, वे, उसका, उनका।

   (घ) जिन सर्वनाम-शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता , वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–दरवाजे पर कोई है। दूध में कुछ गिर गया है। इन वाक्यों में कोई तथा कुछ शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता, अतः ये अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(ङ) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग अपने लिए किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे—आप स्वयं पढ़िए। मैं अपने-आप चला जाऊँगा। यहाँ स्वयं तथा अपने-आप निजवाचक सर्वनाम हैं।

2. (क) पुरुषवाचक (ख) निश्चयवाचक (ग) अनिश्चयवाचक (घ) प्रश्नवाचक (ङ) संबंधवाचक (च) निजवाचक।
3. (क) तुम्हें - मेरे (ख) तुम (ग) मुझे (घ) उसके (ङ) उसका - मेरे (च) उसे।
4. (क) तुम यहाँ बैठो।
(ख) ये किसकी पुस्तकें हैं?
(ग) हम विद्यालय जा रहे हैं।
(घ) वे इस तरफ आ रहे हैं।
(ङ) हम सब खेलने जाएँगे।
5. पुरुषवाचक सर्वनाम — मैं, तुम्हारा, आपका।
निजवाचक सर्वनाम — स्वयं, खुद, अपने-आप।
संबंधवाचक सर्वनाम — जैसा-वैसा, जो-सो।

●●

अध्याय—10

विशेषण

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं । विशेषण के चार भेद हैं—
(i) गुणवाचक विशेषण
(ii) संख्यावाचक विशेषण
(iii) परिमाणवाचक विशेषण
(iv) संकेतवाचक विशेषण।

(ख) जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध होता है, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— मेरे पास दस रुपये हैं जबकि अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे—कक्षा में कुछ विद्यार्थी हैं।

(ग) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं जबकि वे शब्द जिनकी विशेषता बताई जाती हे, विशेष्य कहलाते हैं।

2. (ग) **तीन किलो** — परिमाणवाचक
(घ) **तीन** — संख्यावाचक
(ङ) **सुरीला** — गुणवाचक
(च) **अच्छा** — गुणवाचक
(छ) **तीन मीटर** — परिमाणवाचक
(ज) **सुंदर** — गुणवाचक
(झ) **चुटकी भर** — परिमाणवाचक
(ञ) **कुछ** — संख्यावाचक
3. गर्व — गर्वीला, आलस — आलसी,
डर — डरपोक, धन — धनवान,
दया — दयालु, निश्चय — निश्चयात्मक,
राष्ट्र — राष्ट्रीय, सुख — सुखी,
कृपा — कृपालु, घर — घरेलू,
देश — देशी, कुल — कुलीन,
भारत — भारतीय, लड़ाई — लड़ाकू ।
4. (क) कोई (ख) देशभक्त
(ग) वीर (घ) रसीला
(ङ) पका।
5. (क) मीठे (ख) काले
(ग) बुद्धिमान (घ) मधुर
(ङ) ऊँचे।

●●

अध्याय—11

क्रिया और काल

1. (क) जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, वे क्रिया कहलाते हैं । क्रिया के दो भेद होते हैं—
(i) सकर्मक क्रिया तथा (ii) अकर्मक क्रिया।

(ख) अकर्मक क्रिया के साथ कोई कर्म नहीं होता है; जैसे— राम सो रहा है जबकि सकर्मक क्रिया के साथ कर्म होता है; जैसे— विनय आम खा रहा है।

(ग) क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का समय पता चले, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं—
(1) भूतकाल (2) वर्तमानकाल तथा (3) भविष्यतकाल।

(घ) क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते समय में होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं;
जैसे– राम ने रावण को मारा ।
मैंने पत्र लिखा ।
वह मैदान में खेल रहा था।

(ङ) क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान (मौजूदा) समय में होने का बोध हो, वह वर्तमान काल कहलाता है;
जैसे–विनोद गीत गाता है। नीना चाय पी रही है। वह अपने घर गया है।

2. (ख) सकर्मक – भविष्यत्काल,
(ग) सकर्मक – भूतकाल,
(घ) सकर्मक – भविष्यत्काल,
(ङ) अकर्मक – वर्तमान काल।

3. (i) राम और श्याम घर पहुँचकर सो गए।
(ii) रानी तथा शालिनी पढ़कर खेलने गईं।
(iii) बाली और सुग्रीव लड़कर थक गए।

4. (क) बैठना – (अकर्मक) तुम चुपचाप बैठे रहो।
बिठाना – (सकर्मक) बच्चे को झूले पर बिठा दो।
(ख) चलना (अकर्मक) अच्छा, मैं चलता हूँ।
चलाना (सकर्मक) ट्रक चलाना आसान नहीं है।
(ग) भागना (अकर्मक) घोड़ा भाग गया।
भगाना (सकर्मक) मैंने बंदर को भगा दिया।
(घ) करना (अकर्मक) तुम कुछ नहीं करते हो।
कराना (सकर्मक) झगड़े कराना अच्छी बात नहीं है।
(ङ) नाचना (अकर्मक) वह बहुत अच्छी तरह नाची।
नचाना (सकर्मक) मदारी बंदरिया को नचाता है।

5.

	क्रिया-शब्द	काल		वाक्य प्रयोग
(i)	**पढ़ना–**	भूतकाल	–	राम ने पत्र पढ़ा।
		वर्तमानकाल	–	राम पत्र पढ़ता है।
		भविष्यत्काल	–	राम पत्र पढ़ेगा।
(ii)	**सोना–**	भविष्यत्काल	–	वह सोयेगा ।
		भूतकाल	–	वह सोया था।
		वर्तमानकाल	–	वह सो रहा है।
(iii)	**जागना–**	वर्तमानकाल	–	विनय जाग रहा है।
		भविष्यत्काल	–	विनय जागेगा।
		भूतकाल	–	विनय जाग रहा था।
(iv)	**खाना–**	वर्तमानकाल	–	मैं आम खाता हूँ।
		भूतकाल	–	मैंने आम खाए।
		भविष्यत्काल	–	मैं आम खाऊँगा।
(v)	**पीना–**	वर्तमानकाल	–	वह दूध पीती है।
		भूतकाल	–	उसने दूध पिया था।
		भविष्यत्काल	–	वह दूध पियेगी।
(vi)	**खेलना–**	वर्तमानकाल	–	वह खेलता है।
		भूतकाल	–	वह खेलता था।
		भविष्यत्काल	–	वह खेलेगा।
(vii)	**देखना–**	वर्तमानकाल	–	वह टीवी देखता है।
		भूतकाल	–	वह टीवी देखता था।
		भविष्यत्काल	–	वह टीवी देखेगा।

●●

अध्याय–12

अव्यय–शब्द

1. (क) अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जो लिंग, वचन, कारक या काल के आधार पर अपना रूप नहीं बदलते। अत: इन्हें अविकारी शब्द भी कहा जाता है।

   (ख) **अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं–**
   (1) क्रिया-विशेषण, (2) संबंधबोधक, (3) समुच्चयबोधक, (4) विस्मयादिबोधक तथा (5) निपात।

   (ग) **क्रिया विशेषण–** अव्यय चार प्रकार के होते हैं–(1) रीतिवाचक, (2) कालवाचक, (3) स्थानवाचक तथा (4) परिमाणवाचक।

2. (क) चबाने लगी (क्रिया/~~क्रिया विशेषण~~)
   चबा-चबाकर (~~क्रिया~~/क्रिया विशेषण)
   (ख) फुदक रही (क्रिया/~~क्रिया विशेषण~~)
   फुदक-फुदक कर (~~क्रिया~~/क्रिया विशेषण)
   (ग) चिल्ला-चिल्ला कर (~~क्रिया~~/क्रिया विशेषण)
   चिल्ला रहा (क्रिया/~~क्रिया विशेषण~~)
   (घ) दौड़कर (~~क्रिया~~/क्रिया विशेषण)
   दौड़ा (क्रिया/~~क्रिया विशेषण~~)
   (ङ) फूट-फूट कर (~~क्रिया~~/क्रिया विशेषण)
   फूट गया (क्रिया/~~क्रिया विशेषण~~)

3. (क) पर – संबंधबोधक,
   (ख) जोर-जोर से – क्रियाविशेषण,
   (ग) के कारण – संबंधबोधक,
   (घ) और – समुच्चययबोधक,
   (ङ) बाप रे बाप ! – विस्मयादिबोधक।

●●

अध्याय–13

विराम–चिह्न

1. **नीम** – अरे भाई पीपल ! तुम आज इतने मुरझाए से क्यों लग रहे हो ?

   पीपल – क्या करूँ, पर्यावरण असंतुलन के कारण गर्मी बहुत पड़ रही है। बारिश कम हो रही है।

   नीम – हाल तो मेरा भी कुछ-कुछ ऐसा ही है। सुना है, बाहर के रास्ते पर एक होटल बन रहा है। सभी छोटे-बड़े पेड़ों को काट दिया जाएगा।

   पीपल – अरे ! यह ठीक नहीं है। जाओ, उन्हें पेड़ काटने से रोको।
   (इतने में पास ही रेडियो पर कोई कह रहा है कि हरियाली है जहाँ समृद्धि है वहाँ।)

2. (;) अद्‌र्धविराम, (?) प्रश्नवाचक चिह्न, (।) पूर्ण विराम, (!) विस्मयादि बोधक चिह्न, (–) निर्देशक चिह्न, (‘‘ ’’) उद्‌धरण चिह्न, (-) योजक चिह्न, (०) लाघव चिह्न, (,) अल्प विराम, (λ) हंस पद चिह्न।

3. उद्‌धरण चिह्न – नेहरू जी ने कहा था, ‘‘आराम हराम है।’’
   विस्मयादि बोधक चिह्न – हाय ! मैं लुट गया।
   योजक चिह्न – राम-लक्ष्मण भाई-भाई थे।

●●

अध्याय–14

शब्द–भंडार

1. (क) परस्पर समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं। जैसे–सर्प, नाग, भुजंग–तीनों शब्दों का अर्थ ‘साँप’ है। अत: ये पर्यायवाची शब्द हैं।

   (ख) जो शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहा जाता है। जैसे–रात-दिन, अँधेरा-उजाला, राजा-रंक आदि।

   (ग) जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। जैसे–‘अंक’ शब्द के तीन अर्थ हैं– गोद, संख्या, नाटक का भाग। अत: यह अनेकार्थी शब्द हैं।

   (घ) उच्चारण में लगभग समान, किन्तु अर्थ में भिन्न शब्द समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं । जैसे–गृह-ग्रह, ये शब्द उच्चारण में लगभग समान हैं किन्तु इनके अर्थ अलग-अलग हैं। अत: ये समश्रुति भिन्नार्थक शब्द हैं।

(ङ) वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं तथा उनके अर्थ को सरलता एवं स्पष्टतापूर्वक प्रकट करते हैं, 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहे जाते हैं। जैसे—जो लकड़ी का काम करता है = बढ़ई।

2. **राजा** – भूप, भूपति; **स्त्री** – नारी, महिला;

हाथी – गज, द्विरद; **कमल** – जलज, वारिज।

3. (क) पराजय, (घ) घृणा,
(ग) अपमान, (घ) अन्याय,
(ङ) अहित।

4. **अंबर** – **वस्त्र** – श्रीकृष्ण के अम्बर पीले रंग के हैं।
आकाश – अम्बर में पक्षी उड़ रहे हैं।
फल – **वृक्ष का फल** – आम फलों का राजा है।
परिणाम – परिश्रम का फल मीठा होता है।
तीर – **किनारा** – नदी के तीर पर हरे-हरे वृक्ष हैं।
बाण – तीर लगते ही मृग मर गया ।
रस – **आनंद** – संगीत के रस में सभी डूब जाते हैं।
पीने योग्य तरल पदार्थ – आँवलों का रस अमृत के समान माना जाता है।
कनक – **धतूरा** – कनक एक नशीला जंगली फल है।
सोना – कनक अत्यंत मूल्यवान धातु है।

5. (क) कुल, (ख) और,
(ग) परिमाण, (घ) उपयुक्त,
(ङ) आचार।

6. जो कठिनाई से मिले – दुर्लभ, जो अपने देश का हो – स्वदेशी, जिसका भाग्य अच्छा न हो – भाग्यहीन, जिसे गिना न जा सके – अनगिनत, जो बहुत बोलता हो – वाचाल, जिसके आने की कोई तिथि न हो – अतिथि, हिंसा करने वाला – हिंसक।

●●

अध्याय–15

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

1. हवा से बातें करना – बहुत तेज दौड़ना, प्राणों की बाजी लगाना – मर मिटने को तैयार होना, आँखें फटना – आश्चर्य चकित होना, आसमान सिर पर उठाना – बहुत शोर करना, आँखों से ओझल होना – दूर जाने के कारण दिखाई न देना, पापड़ बेलना – कठिन परिश्रम करना।

2. (क) आँख नम गई।
(ख) आग-बबूला हो
(ग) चूहे कूद रहे हैं।
(घ) नौ-दो ग्यारह।
(ङ) टाँग अड़ाने।

3. (क) (स) शुरूआत करना
(ख) (स) युद्ध में लड़ते हुए मर जाना।
(ग) (ब) मदद करना।
(घ) (अ) रुकावट डालना।
(ङ) (स) बुरी तरह हराना।

4. **आ बैल मुझे मार** – स्वयं मुसीबत बुलाना, **एक पंथ दो काज** – एक काम करते समय दूसरा काम भी हो जाना, **ऊँट के मुँह में जीरा** – आवश्यकता से बहुत कम होना, **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** – बहुत परिश्रम करने के बाद नाम मात्र का लाभ होना, **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** – समस्या को जड़ से खत्म करना।

5. (i) ओखली में सिर देना।
(ii) एक अनार सौ बीमार ।
(iii) भैंस के आगे बीन बजाना
(iv) चिराग तले अँधेरा।
(v) आम के आम-गुठलियों के दाम।

●●

अध्याय–16

पत्र–लेखन

1. सेवा में,
प्रधानाचार्य
गीतांजलि पब्लिक स्कूल
सुभाष नगर, श्री गंगानगर (राज.)
दिनांक : 20-8-20.....
विषय— पानी पीने की उचित व्यवस्था हेतु प्रार्थना-पत्र।
महोदय,
मैं आपके विद्यालय में कक्षा-5 (स) का छात्र हूँ तथा आपका ध्यान विद्यालय में पेयजल की अव्यवस्था की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में छात्रों के पानी पीने हेतु केवल एक टंकी बनी हुई है जिससे वहाँ छात्रों की भीड़ लगी रहती है। टंकी में लगी हुई चारों टोंटियों में से पानी रिसता रहता है जिससे टंकी के आस-पास कीचड़ तथा फिसलन बनी रहती है। ऐसे में छात्रों के फिसलने तथा चोटिल होने का भय बना रहता है। इतना ही नहीं टंकी की सफाई भी नियमित रूप से नहीं की जाती है जिससे पेयजल के प्रदूषित होने की आशंका बनी रहती है। अत: आपसे प्रार्थना है कि विद्यालय में पानी पीने की उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
धर्मेन्द्र राठौड़-कक्षा-5 (स)

2. 35, टैगोर कुंज
रणजीत नगर, जैसलमेर (राज.)
दिनांक : 12-9-20.....
आदरणीय पिताजी,
सादर चरणस्पर्श । मैं यहाँ सकुशल हूँ तथा आप सबकी कुशलता हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । आपका पत्र मिला, आप मेरी पढ़ाई के विषय में चिन्तित न हों। मेरी पढ़ाई बहुत अच्छी तरह चल रही है। हमारे सभी अध्यापक बहुत रोचक ढंग से पढ़ाते हैं जिससे सभी विषय आसानी से समझ में आ जाते हैं। यही नहीं, गणित एवं विज्ञान के अध्यापक तो अतिरिक्त कक्षा लेकर छात्रों की सभी जिज्ञासाओं का समाधान करते हैं। अगले सप्ताह से हमारी अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ प्रारंभ होने वाली हैं, मैं पूर्ण परिश्रम से अध्ययनरत हूँ। मुझे आशा है कि मुझे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। आदरणीया माताजी को मेरा प्रणाम तथा दीदी को नमस्ते कहें।
आपका प्रिय पुत्र
राकेश तिवारी

●●

अध्याय–17

निबंध–लेखन

1. स्वतंत्रता-दिवस

लगभग दो सौ वर्षों की पराधीनता के पश्चात् भारत 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। अत: 15 अगस्त को स्वतंत्रता-दिवस के रूप में प्रतिवर्ष बड़े ही हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है। स्वतंत्रता-दिवस भारत का राष्ट्रीय पर्व है जिसे प्रत्येक भारतीय, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, बड़े गौरव के साथ मनाता है।

इस दिन भारत के प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर पर झण्डा फहराते हैं तथा राष्ट्र को संबोधित करते हुए शासन की प्रगतिशील नीतियों तथा कार्य-योजनाओं से जनता को अवगत कराते हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के साथ-साथ सभी राज्यों की राजधानियों में भी तिरंगा फहराकर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। शैक्षिक संस्थाओं एवं व्यापारिक संस्थाओं में भी सार्वजनिक अवकाश रखते हुए अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथा मिष्ठान्न वितरण किया जाता है।

स्वतंत्रता-दिवस का प्रत्येक भारतीय के लिए अत्यंत महत्व है क्योंकि यह दिन हमारे जीवन में स्वतंत्रता का वह गौरवपूर्ण आनंद लाया जिसे प्राप्त करने में हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानियों ने अपने प्राण तक न्योछावर

कर दिए। न जाने कितने लोगों ने अंग्रेजों की जेलों में यातनाएँ सहीं किन्तु वे स्वतंत्रता-प्राप्ति के संकल्प से नहीं डिगे। हमें अपने उन सेनानियों पर, स्वतंत्रता-संग्राम के अमर शहीदों पर गर्व करना चाहिए तथा अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए तन-मन-धन से तैयार रहना चाहिए।

2. दीपावली

दीपावली भारत के प्रमुख चार त्योहारों में से एक है। यह त्योहार कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। 'दीपावली' का शाब्दिक अर्थ है— दीपकों की अवली, अर्थात् दियों की पंक्ति या कतार। दीपावली के दिन घर-घर में दीपकों की लड़ियाँ झिलमिलाती हैं। इस दिन घरों और बाजारों में सजावट की जाती है। सभी नए वस्त्र धारण करते हैं। रात को लक्ष्मी-गणेश का पूजन किया जाता है। बच्चे पटाखे तथा फुलझड़ियाँ चलाते हैं। सभी लोग परस्पर सुख-समृद्धि की शुभकामनाओं के साथ मिष्ठान्न का आदान-प्रदान करते हैं। दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन-पूजा तथा तीसरे दिन यम-द्वितीया का पर्व मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाईयों की मंगलकामना करते हुए उन्हें तिलक करती हैं तथा मिठाई खिलाती हैं। भाई बहनों को दक्षिणा एवं उपहार देते हैं।

दीपावली को मनाने की परंपरा त्रेता युग से चली आ रही है। कहा जाता है कि जब श्रीराम चौदह वर्ष के वनवास के बाद रावण-वध करके अयोध्या लौटे तो अयोध्यावासियों ने दीये जलाकर उनका स्वगात किया। आजकल इस पर्व के अवसर पर कुछ लोग जुआ खेलते हैं जिससे व्यर्थ में धन-हानि एवं विवाद पैदा होते हैं। पटाखों के अत्यधिक प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषित होता है तथा आग लगने की दुर्घटनाएँ भी हो जाती हैं। हमें ऐसे कामों से बचना चाहिए।

दीपावली अंधकार पर विजय का प्रकाश-पर्व है। यह हमारे जीवन में सुख समृद्धि का संदेश लेकर आता है यह हम सबको मिलकर प्रेम एवं सौहार्द्र के साथ मनाना चाहिए।

3. स्वामी दयानंद

भारत की पुण्यभूमि पर एक से बढ़कर एक महापुरुषों, संतों, भक्तों तथा समाज सुधारकों ने जन्म लिया है। स्वामी दयानन्द उन्हीं में एक हैं। स्वामी दयानन्द जी के बचपन का नाम मूलशंकर था। इनके पिताजी का नाम श्री करसन लाल तिवारी तथा माताजी का नाम अमृत बाई था। इनका जन्म 12 फरवरी, 1824 को गुजरात के टंकारा नामक गाँव में हुआ था।

स्वामी जी बचपन से ही बड़े प्रतिभाशाली एवं तार्किक बुद्धि के धनी थे। किसी भी बात को तर्क की कसौटी पर कसे बिना सच मान लेना उनके स्वभाव के विरुद्ध था। एक बार वे महाशिवरात्रि के पर्व पर भगवान शिव की पूजा हेतु अपने पिता जी के साथ शिवालय में गए। वहाँ शिवलंग पर चढ़ाई गई पूजा-सामग्री को कुतरते हुए एक चूहे को देखकर उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। उन्होंने सोचा— ये कैसे शंकर भगवान हैं जो एक चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते। वे सच्चे ईश्वर की खोज में लग गए। स्वामी जी की जिज्ञासाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती गईं। उन्होंने घर छोड़ दिया और भ्रमण करते हुए अनेक नगरों में बड़े-बड़े विद्वानों से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करना चाहा किन्तु कहीं भी पूर्ण संतुष्टि प्राप्त नहीं हुई। अंतत: मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में उनकी ज्ञान-पिपासा शान्त हुई। उन्होंने स्वामी विरजानन्द जी से दीक्षा ली तथा संन्यास धारण किया। अपने गुरुजी की आज्ञानुसार उन्होंने अपना समस्त जीवन वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा अंधविश्वास व धार्मिक आडंबरों के विरोध में लगा दिया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ की रचना की। स्त्रियों को वेद पढ़ने के अधिकार का समर्थन किया । उन्होंने 'आर्य समाज' नामक संस्था की स्थापना की जिसके माध्यम से बाल विवाह, सती प्रथा जैसी अनेक कुरीतियों

का विरोध करते हुए स्त्री शिक्षा, विधवा-विवाह जैसे सुधारात्मक कदमों से हिन्दू समाज को नई दृष्टि प्रदान की। वे मूर्तिपूजा तथा बहु देववाद के प्रबल विरोधी थे। 30 अक्टूबर, 1883 को मात्र 59 वर्ष की आयु में भारत के इस महान समाज सुधारक का निधन हो गया।

4. अनुशासन का महत्व

'अनुशासन' का शाब्दिक अर्थ है—शासन का अनुगमन, अर्थात् नियमों के पीछे चलना। इसप्रकार अपने अभिभावकों तथा गुरुजनों के निर्देशानुसार आचरण करना तथा उनकी आज्ञा का पालन करते हुए नियमानुसार सभी कार्य करना ही अनुशासन कहलाता है। अनुशासन का अर्थ किसी प्रकार के बंधनों को थोपना नहीं अपितु जीवन के कार्य एवं व्यापार को व्यवस्थित करना है।

अनुशासन का हमारे जीवन में अत्यंत महत्व है। अनुशासन के बिना व्यक्ति का जीवन उच्छृंखला एवं समाज-विरोधी बन जाता है। एक अनुशासित व्यक्ति ही श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। अनुशासनहीनता सामाजिक अशांति को जन्म देती है। अनुशासित व्यक्ति ही समय के महत्व को समझता है और सदाचार आदि गुणों की उपयोगिता समझता है।

विद्यार्थियों के लिए तो अनुशासन प्राणदायिनी संजीवनी के समान है। यह उनकी दिनचर्या को व्यवस्थित करता है, समय के सदुपयोग की शिक्षा देता है तथा इसमें उनकी नियमित रूप से कार्य करने की क्षमता का विकास होता है। किसी भी विद्यार्थी के अनुशासनहीन बनने में अभिभावक, शिक्षक तथा सामाजिक वातावरण समान रूप से उत्तरदायी होते हैं।

अनुशासित रहकर कार्य करने वाले व्यक्ति ही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। यह हम अपने आचरण को अनैतिक एवं व्यर्थ की बातों से दूर रखकर अपने-आपको सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार अनुशासित कर लें तो सफलता हमारे कदम चूमेगी। अनुशासन ही सफलता का एकमात्र साधन है।

●●

अध्याय–18

कहानी–लेखन

1. कौआ और गिलहरी

किसी जंगल में नीम का एक पेड़ था। उस पेड़ पर एक गिलहरी और कौआ रहते थे। गिलहरी बहुत परिश्रमी थी जबकि कौआ बहुत आलसी था। एक बार दोनों ने मिलकर खेती करने का विचार किया। गिलहरी ने खेत को जोतकर बीज बोने के लिए कौए को बुलाया, किन्तु कौआ नहीं आया। गिलहरी ने खुद ही बीज बो दिए। इसी प्रकार खेत की सिंचाई करते समय भी कौए ने गिलहरी की कोई सहायता नहीं की। फसल जब पक गई तो उसे काटने भी अकेली गिलहरी ही गई। कौए को जब भी बुलाया जाता वह यही कहता– ''तू चल मैं आता हूँ, चुपड़ी रोटी खाता हूँ, हरी डाल पर बैठा हूँ।''

गिलहरी फसल काटकर अपने हिस्से का अनाज घर ले आई। आलसी कौए ने बार-बार कहने पर भी खेत से अपने हिस्से का अनाज नहीं उठाया। वह पेड़ की डाल पर बैठे-बैठे ''तू चल मैं आता हूँ .....'' का गीत ही गाता रहा। तभी बहुत जोर की बारिश हुई और कौए के हिस्से का सारा अनाज वर्षा के पानी में बह गया। अब आलसी कौआ बहुत पछताया और काँव-काँव करके रोने लगा।

2. लोमड़ी और अंगूर

किसी जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। एक दिन उसे दोपहर तक खाने को कुछ नहीं मिला, भूख के कारण वह बहुत व्याकुल थी। वह भोजन की खोज में इधर-उधर भटक रही थी। तभी उसे एक बाग दिखाई दिया। वह बाग के अंदर पहुँची तो उसने वहाँ पके हुए अंगूरों के गुच्छे लटके देखे। उसने अंगूर खाकर अपनी भूख मिटाने का निश्चय किया और अंगूरों के गुच्छों पर उछली। किन्तु अंगूर के गुच्छे बहुत ऊँचाई पर थे, अत: लोमड़ी उन्हें न पा सकी। लोमड़ी ने कई बार तेजी से उछलते हुए अंगूर पाने का प्रयास किया, किन्तु वह हर

बार असफल ही रही। थक-हार कर लोमड़ी बाग के बाहर आ गई। उसने अपने आपको समझाने के लिए सोचा— अच्छा हुआ जो ये अंगूर मैं न खा सकी। ये बहुत खट्टे होंगे जिन्हें खाकर मैं बीमार पड़ सकती थी।

शिक्षा—जब हम किसी वस्तु को पाने में असफल रहते हैं, तो स्वयं को नहीं, उस वस्तु को ही दोष देते हैं।

3. ईमानदार लकड़हारा

किसी गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह बहुत गरीब लेकिन ईमानदार था। वह प्रतिदिन जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता तथा नगर में उन लकड़ियों को बेच देता। यही उसकी आजीविका का साधन था। एक बार वह नदी के किनारे स्थित एक पेड़ से लकड़ियाँ काट रहा था कि अचानक उसकी कुल्हाड़ी उसके हाथ से छूटकर नदी में गिर पड़ी। लकड़हारा बहुत दु:खी हुआ और नदी किनारे बैठकर भगवान से कुल्हाड़ी मिल जाने की प्रार्थना करने लगा।

लकड़हारे को दु:खी देखकर जब देवता नदी से प्रकट हुए। उन्होंने लकड़हारे को एक सोने की कुल्हाड़ी देते हुए पूछा— 'क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?'' लकड़हारे ने बड़ी विनम्रता से जल देवता से कहा कि वह उसकी कुल्हाड़ी नहीं थी। जल देवता ने यह सुनकर नदी में डुबकी लगाई और एक चाँदी की कुलहड़ी लिए हुए नदी से बाहर आये। उन्होंने लकड़हारे को चाँदी की कुल्हाड़ी देनी चाही, किन्तु लकड़हारे ने चाँदी की कुल्हाड़ी लेने से मना कर दिया और जल देवता से कहा कि उसकी कुल्हाड़ी तो साधारण लोहे की कुल्हाड़ी थी। यह सुनकर जल देवता ने पुन: नदी में डुबकी लगाई, और इस बार वे लोहे की कुल्हाड़ी लेकर नदी से बाहर आये। अबकी बार लकड़हारा खुशी से बोला कि वही उसकी कुल्हाड़ी थी।

लकड़हारे की ईमानदारी देखकर जल देवता अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने तीनों-सोने, चाँदी एवं लोहे की—कुल्हाड़ियाँ लकड़हारे को देते हुए उसे सुखी जीवन का वरदान दिया। लकड़हारा सोने और चाँदी की कुल्हाड़ियाँ पाकर काफी अमीर हो गया। वह अब लकड़ियों का व्यापार करके सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा।

●●

अध्याय—19

संवाद-लेखन

राम — क्यों, आज वहाँ कोई विशेष कार्यक्रम है क्या ?

राघव — नहीं, ऐसी कोई बात नहीं । मैं तो प्रात:काल प्रतिदिन ही वहाँ जाता हूँ।

राम — प्रतिदिन वहाँ जाकर तुम क्या करते हो?

राघव — हमारी कॉलोनी के सभी बच्चे प्रात:काल वहाँ जाकर खेलते हैं।

राम — यह तो बहुत अच्छी बात है। तुम लोग कौन-कौन से खेल खेलते हो?

राघव — सभी बच्चे अपनी-अपनी टोलियों के साथ अपनी रुचि के खेल खेलते हैं।

राम — मित्र, तुम्हारी रुचि किस खेल में है? तुम कौन-सा खेल खेलते हो?

राघव — वैसे तो मुझे सभी खेल अच्छे लगते हैं, किन्तु कबड्डी में मेरी विशेष रुचि है।

राम — तुम्हारी रुचि वाकई तारीफ के काबिल है। कबड्डी एक अच्छा खेल है।

राघव — यह अच्छा ही नहीं, एकदम स्वदेशी ओर बिना खर्च वाला खेल है।

राम — सच है, हमें विदेशी खेलों के महँगे उपकरणों में धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

राघव — फिर देर किस बात की, तुम भी कबड्डी खेलने हमारे साथ चलो।

●●

अध्याय–20

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

1. (1) समय का मूल्य समझने वाले ही समय का सदुपयोग कर पाते हैं और इस प्रकार वे जीवन में सफलता पाकर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते जाते हैं।
   (2) कुछ लोग समय का सही ढंग से नियोजन नहीं करते और सदा समय के अभाव की बात करते हैं। इसीलिए वे समय का सदुपयोग नहीं कर पाते।
   (3) नहीं, समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, यह किसी के लिए नहीं रुकता।
   (4) संसार की सबसे अनमोल वस्तु 'समय' है।
   (5) समय।

2. (1) बचपन
   (2) निश्चिंत रहना, खेलना, खाना, निर्भयतापूर्वक स्वच्छन्द घूमना-फिरना, यहाँ तक कि रोना और मचलना भी बचपन के वे आनंद हैं जो कभी भूले नहीं जा सकते।
   (3) क्रिया-शब्द—खेलना, खाना, फिरना, भूलना, जा सकना, रोना, मचल जाना, दिखाना, पहनाना। विशेषण-शब्द—निर्भय, स्वच्छन्द, अतुलित, बड़े-बड़े।
   (4) आँसुओं को बड़े-बड़े मोतियों के समान बताया गया है।
   (5) आँसुओं को जयमाला इसलिए कहा गया है कि बच्चों की आँखों में आँसू देखते ही माता-पिता उनकी इच्छा पूरी कर देते हैं। इस प्रकार आँसू टपकाते ही बच्चे जीत जाते हैं।

●●